गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन

खोज गाँधीजी की

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव की त्रैमासिक पत्रिका : दिसम्बर, २०१७

बा-बापू १५०

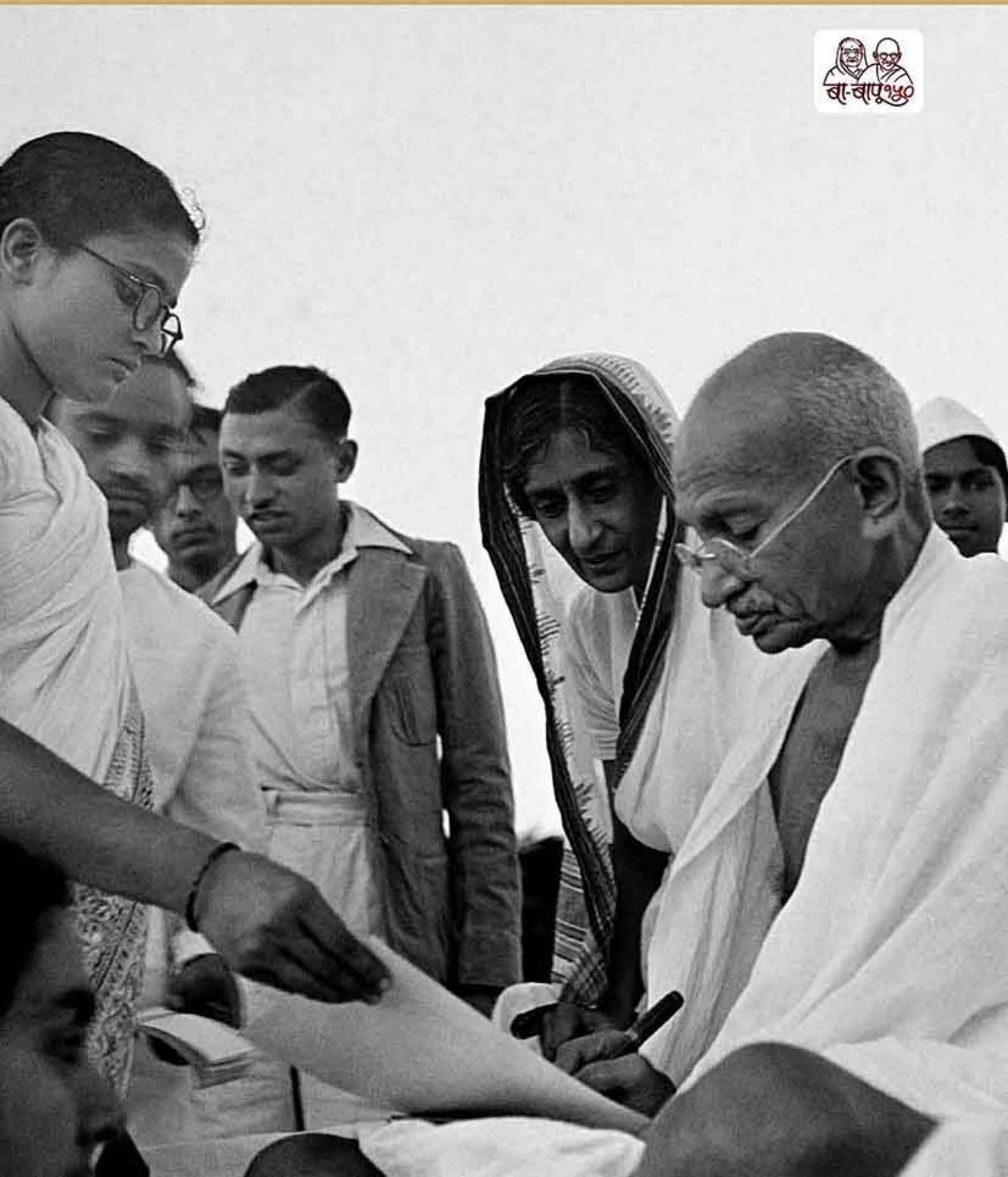

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव द्वारा प्रकाशित -

खोज गाँधीजी की

सत्य व अहिंसापरक विचारों को समर्पित

वर्ष-१, अंक-२ □ दिसम्बर, २०१७

सत्याग्रह में वैर-भाव के लिए स्थान ही नहीं है।

- महात्मा गाँधी

इस अंक में- .....पृष्ठ

संपादकीय..... १
नारायण हेमचंद्र २
भारत में अनशन का पहला प्रयोग (अहमदाबाद मिल-मजदूर सत्याग्रह के संदर्भ में).....४
३० जनवरी १९४८ - मनु बहन गाँधी की डायरी से..... ६
आज की समाज रचना - *(डॉ. भवरलालजी जैन)*..... ८
फाउण्डेशन की गतिविधियाँ.....९-१६

संस्थापक
स्व. डॉ. भवरलालजी जैन

मार्गदर्शक
न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी

प्रबंध संपादक
अशोक जैन

संपादक
अश्विन झाला

संपादकीय मंडल
डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय, भुजंगराव बोबडे

कला एवं अक्षर-सज्जा
भूषण मोहरीर

संपादकीय कार्यालय
गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन,
गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स संख्या 118, जलगाँव - 425 001.
दूरभाष : 0257-2260011/22, 2264801/03, मो.: 9404955272
फैक्स : 0257-2261133
वेबसाइट : www.gandhifoundation.net
ई-मेल : info@gandhifoundation.net
CIN No.: U73200MH2007NPL169807

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए खोज गाँधीजी की यह त्रैमासिक मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन इन्होंने आनंद पब्लिकेशन्स्, १०६/१, मुसली फाटा, ता. धरणगाँव, जि. जलगाँव-४२५१०३, महाराष्ट्र। यहाँ से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव-४२५००१, महाराष्ट्र यहाँ से प्रकाशित किया। संपादक - अश्विन भामाभाई झाला।

सभी चित्र गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन संग्रह से।

संपादकीय...

सालों से कार्यरत रहे बड़े समूहों में मजदूर और मालिक के बीच हडताल होने के किस्से बार बार सामने आते रहते है। कुछ समूहों में हडताल ऐसी हुई है कि मानों वे ऐतिहासिक घटना बन गई हो ऐसा भी लगता है। मजदूर और मालिक एक दूसरे के साथ सालों से कार्य करते है उसके बावजूद भी एक-दूसरे के संबंध शाश्वत नहीं बने हो ऐसा भी देखने को मिलता है। कई सारे समूह ऐसे भी है जहाँ पर हड़ताल तो दूर की बात है, किंतु मजदूर और मालिक के बीच किसी भी तरह के नन्हे झगड़े भी नहीं हुए हो ऐसा भी देखने को मिलता है। कई समूहों में अनोखी शैली भी देखने को मिलती है, जहाँ पर मजदूर और मालिक जैसे संबंधों की दीवार ही नहीं होती है। क्या भला ऐसा भी संभव हो सकता है? जी हाँ, बिलकुल संभव है यह केवल तभी ही संभव है जब मजदूर को मालिक का दर्जा दिया जाए और मालिक अपने आपको उनका स्वामी न समझे। यह तभी हो सकता है जब समूह में केवल और केवल आर्थिक बाबत को प्राथमिकता नहीं दि जाती हो, किंतु मानवीय संबंधों और उनकी गरिमा को महत्व दिया जाता हो। जहाँ पर व्यक्ति को मजदूर की दृष्टि से नहीं किंतु मनुष्य की दृष्टि से देखने का नजरिया अग्रस्थ हो।

आज का युग सिद्धांत आधारित व्यवसाय का युग है, व्यवसाय केवल मुनाफा आधारित ही नहीं, बल्कि नैतिक विचार आधारित भी होना आज के समय की जरूरत बन गया है। यह तो निश्चित ही है कि शाश्वतता की ओर आगे बढ़ना है तो सामाजिक उत्तरदायित्व का प्रस्थापन होना आवश्यक है। किसी भी व्यवसाय के लिए तीन तत्वों (Three "M') की आवश्यकता होती है Money, Market or Management. लेकिन चौथा "M' भी उतना ही आवश्यक है, वह है Mind (विचार)। और अगर वैचारिक प्रबलता है तो उनमें सदाचार के दर्शन होना स्वाभाविक है, इसीलिए गाँधीजी ने सिद्धांत विहीन धनोपार्जन और सदाचार विहीन व्यापार को सामाजिक पाप माना है। सिद्धांत वह है जिसके लिए मनुष्य अपना सर्वस्व और स्वार्थ छोड़ने को तैयार हो जाए। ऐसा कर पाते तो स्वाभाविक रूप से हमारे आसपास घिरी समस्या का समाधान वहीं पर खोज पाएंगे, यह भी तो एक बड़ी सामाजिक सेवा है।

देश बंधुओं की सेवा करने में ही गाँधीजी अपने आपको समर्पित कर देते थे। इसलिए तो उन्होंने अपनी अंतर आत्मा की आवाज सुनते हुए कहा कि 'स्वयं को खोजने का सबसे अच्छा तरीका दूसरों की सेवा में अपने आपको खो देने में है।' दुखियों की आवाज सुनना ही उनके लिए ईश्वर भक्ति थी। इस विचार पर मेहर लखनवी की पंक्तियां याद आ जाती है, वे लिखते है कि

'अगर सुन न सको तुम दुखियों की आवाज...
और पोंछ न पाओ किसी के आंसू...
तो क्या फायदा तुम कुरान पढ़ो या नमाज...!'

महात्मा गाँधी कहते थे कि दूसरों को पराया (भिन्न) मानना और उनकी निर्धन स्थिति की ओर नजर अंदाज करना यह सबसे बड़ी हिंसा है। जब तक आर्थिक असमानता रहेगी तब तक हिंसा का अंत नहीं होगा। गाँधीजी ने श्रीमंतो को अपनी संपत्ति का मालिक नहीं किंतु ट्रस्टी बनकर संपत्ति का सद् उपयोग करने के संदर्भ में ट्रस्टीशिप का सिद्धांत दिया है। यह सिद्धांत केवल ऊँच-नीच का समतलीकरण का ही सिद्धांत नहीं है, बल्कि यह सिद्धांत उपलब्ध संसाधन के न्यायपूर्वक इस्तेमाल के द्वारा मानवीय संवेदना के अभिगम को स्थापित करता है। यह आर्थिक समानता के साथ पर्यावरणीय समानता, सामाजिक समानता व मानव अधिकार का भी निरूपण करता है। यूं कहे कि यह अहिंसक स्वाधीनता की सर्वकुंजी है। इस सिद्धांत को हम स्वदेशी सिद्धांत के साथ जोड़कर अच्छी तरह समझ सकते है।

गाँधीजी की स्वदेशी की विभावना केवल वस्तुलक्षीता में नहीं है, उनका मूल मानवीय अभिगम को उन्नत करने में है। क्योंकि उनकी स्वदेशी की सबसे बड़ी भावना अगर कोई है तो वह है समीप भावना, यानी की पडोशी भावना। अगर हम ट्रस्टीशिप की संकल्पना में भी देखेंगे तो स्वदेशी केंद्र स्थान पर पाया जाता है। मालिक के लिए सबसे पहली समीप भावना ओर किसी में नहीं किंतु उनके साथ कार्य करने वाली व्यक्ति में है। यहाँ यह सिद्धांत फलित होता है कि मेरे साथ जुड़े हुए लोगों का आर्थिक न्याय करने की जिम्मेदारी मेरी है। और यह केवल आर्थिक तक सिमित नहीं रहेगा किंतु मानवीय मूल्यों में भी उनकी झलक दिखाई देगी।

मूलतः बात हृदय परिवर्तन की है गाँधीजी और हृदय-परिवर्तन इन दो शब्दों का समीकरण आधुनिक काल में इतना दृढ़ हो चुका है कि गाँधीजी की जीवन-दृष्टि का मूलगामी विचार करते समय उसपर चिंतन करना अनिवार्य हो जाता है। गाँधीजी के रहते उनके सिद्धांतों में आस्था रखने वाले चिंतनशील व्यक्तियों ने ट्रस्टीशिप सिद्धांत को अपने जीवन के साथ जोड़ दिया था। आज भी इन विचारों की नींव पर सैकड़ों लोग अपने आप में बदलावकर इस सिद्धांत को व्यवहार में लाते दिखाई देते है। उनमें कई नाम आपको मिल ही जाएंगे, जैन इरिगेशन के संस्थापक डॉ. भवरलालजी जैन ने अपनी निजी संपत्ति से गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन जैसी वैश्विक स्तर की संस्था की स्थापना की है। और अपनी संपत्ति का एक ट्रस्ट बनाकर सामाजिक उत्थान के कार्य के लिए समर्पित कर दिया है। उनका एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है कि 'मैं मेरे काम का मालिक हूँ' यह भावना का निर्माण न केवल अपने में ही बल्कि उनके साथ जूड़े हुए हर एक व्यक्ति में जगाया है। इसलिए डॉ. भवरलालजी जैन द्वारा स्थापित उद्योग समूह के कार्य में सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति जागरूकता का दर्शन होता है, वे मानते थे कि सृष्टि और समाज की ओर से जो कुछ भी प्राप्त हुआ है उसको यत्किंचित लौटाने का हर एक मनुष्य का फर्ज है।

यह और ऐसे कई उदाहरण हमें दिखाई देते हैं जिनके मूल में गाँधी विचार प्रेरक बल बना हो।

वर्ष १९१८ में गाँधीजी ने अहमदाबाद मिल मजदूर सत्याग्रह की अगुआई कर मालिक और मजदूर के बीच की खाई को दूर करने का अहिंसक सफल प्रयास किया था। अनशन के माध्यम से सफल किया गया अहमदाबाद सत्याग्रह हमें यह सिख देता है कि जहाँ पर मालिक और मजदूर के संबंध आदर्श है वहाँ किसी भी तरह के शोषण के लिए कोई स्थान नहीं है।

इस अंक में अहमदाबाद सत्याग्रह की शताब्दी वर्ष के अवसर पर अनशन का पहला प्रयोग अहमदाबाद सत्याग्रह लेख, मनु बहन गाँधी की डायरी से ३० जनवरी १९४८ की वास्तविक घटना पर प्रकाश डालता लेख डायरी के पन्नों से, डॉ. भवरलालजी जैन का लेख एवं फाउण्डेशन की गतिविधियां हमारे स्नेही पाठक वर्ग के लिए प्रस्तुत कर रहे है। आपके सुझाव व अभिप्राय का इंतजार हमेशा की तरह अवश्य रहेगा।

धन्यवाद।

(अश्विन झाला)

नारायण हेमचंद्र

'खोज गाँधीजी की' के प्रत्येक अंक में महात्मा गाँधी द्वारा लिखे 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से एक लेख धारावाहिक रूप में दिया जा रहा है। इसके पीछे उद्देश्य यह है कि जनमानस महात्मा गाँधी की आत्मकथा से उन्हीं के शब्दों में परिचित हो सके। विलायत के दौरान मोहनदास को तरह-तरह के अनुभव प्राप्त हुए। उन अनुभव की गाथा को दर्शाता हुआ प्रस्तुत है आत्मकथा से अगला प्रकरण। **- संपादक**

इन्हीं दिनों स्व. नारायण हेमचंद्र विलायत आये थे। लेखक के रूप में मैंने उनका नाम सुन रखा था। मैं उनसे नेशनल इण्डियन एसोसियेशन की मिस मैनिंग के घर मिला। मिस मैनिंग जानती थीं कि मैं सबके साथ हिलमिल नहीं पाता। जब मैं उनके घर जाता, तो मुंह बन्द करके बैठा रहता। कोई बुलवाता तभी बोलता।

उन्होंने नारायण हेमचंद्र से मेरी पहचान करायी।

नारायण हेमचंद्र अंग्रेजी नहीं जानते थे। उनकी पोशाक अजीब थी। बेडौल पतलून पहने हुए थे। ऊपर सिकुड़नोंवाला, गले पर मैला, बादामी रंग का कोट था। नेकटाई या कॉलर नहीं थे। कोट पारसी तर्ज का, पर बेढंगा था। सिर पर उनकी गुंथी हुई झब्बेदार टोपी थी। उन्होंने लंबी दाढ़ी बढ़ा रखी थी।

कद इकहरा और ठिंगना कहा जा सकता था। मुंह पर चेचक के दाग थे। चेहरा गोल। नाक न नुकीली, न चपटी। दाढ़ी पर उनका हाथ फिरता रहता। सारे सजे-धजे लोगों के बीच नारायण हेमचंद्र विचित्र लगते थे और सबसे अलग पड़ जाते थे।

''मैंने आपका नाम बहत सुना है। आपके कुछ लेख भी पढ़े हैं। क्या आप मेरे घर पधारेंगे?''

नारायण हेमचन्द की आवाज कुछ मोटी थी। उन्होंने मुस्कराते हुए जवाब दिया:

''आप कहाँ रहते हैं?''

''स्टोर स्ट्रटी में।''

''तब तो हम पड़ोसी हैं। मुझे अंग्रेजी सीखनी है। आप मुझे सिखायेंगे?''

मैंने उत्तर दिया, ''अगर मैं आपकी कुछ मदद कर सकूं, तो मुझे खुशी होगी। मैं अपनी शक्तिभर प्रयत्न अवश्य करूंगा। आप कहें तो आपके स्थान पर आ जाया करूं।''

''नहीं, नहीं, मैं ही आपके घर आऊँगा। मेरे पास पाठमाला है। उसे लेता आऊँगा।''

हमने समय निश्चित किया। हमारे बीच मजबूत स्नेह-गाँठ बँध गयी।

नारायण हेमचंद्र को व्याकरण बिलकुल नहीं आता था। वे 'घोड़ा' को क्रियापद बना देते और 'दौड़ना' को संज्ञा। ऐसे मनोरंजक उदाहरण तो मुझे कई याद हैं। पर नारायण हेमचंद्र तो मुझे घोटकर पी जानेवालों में थे। व्याकरण के मेरे साधारण ज्ञान से वे मुग्ध होनेवाले नहीं थे। व्याकरण न जानने की उन्हें कोई शरम ही नहीं थी।

''तुम्हारी तरह मैं किसी स्कूल में नहीं पढा हूँ। अपने विचार प्रकट करने में मुझे व्याकरण की आवश्यकता मालूम नहीं हुई। बोलो, तुम बंगला जानते हो? मैं तो बंगला जानता हूँ। मैं बंगाल में घूमा हूँ। महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर की पुस्तकों के अनुवाद गुजराती जनता को मैंने ही दिये

महात्मा गाँधी

हैं। मैं गुजराती जनता को कई भाषाओं के अनुवाद देना चाहता हूँ। अनुवाद करते समय मैं शब्दार्थ से नहीं चिपकता, भावार्थ देकर संतोष मान लेता हूँ। मेरे बाद दूसरे भले ही अधिक देते रहें। मैं बिना व्याकरण के भी मराठी जानता हूँ, हिन्दी जानता हूँ, और अब अंग्रेजी भी जानने लगा हूँ। मुझे तो शब्द भण्डार चाहिये। तुम यह न समझो कि अकेली अंग्रेजी से मुझे संतोष हो जायेगा। मुझे फ्रांस जाना है। और फ्रेंच भी सीख लेनी है। मैं जानता हूँ कि फ्रेंच-साहित्य विशाल है। संभव हुआ तो मैं जर्मनी भी जाऊँगा और जर्मन भाषा सीख लूँगा''

नारायण हेमचंद्र की वाग्धारा इस प्रकार चलती ही रही। भाषाएँ सीखने और यात्रा करने के उनके लोभ की कोई सीमा न थी।

''तब आप अमरिका तो जरूर ही जायेंगे?''

''जरूर उस नयी दुनिया को देखे बिना मैं वापस कैसे लौट सकता हूँ?''

''पर आपके पास इतने पैसे कहाँ हैं?''

''मुझे पैसों से क्या मतलब? मुझे कौन तुम्हारी तरह टीमटामसे रहना है? मेरा खाना कितना है और पहनना कितना है? अपनी पुस्तकों से मुझे जो थोड़ा मिलता है और मित्र जो थोड़ा दे देते हैं, वह काफी हो जाता है। मैं तो सब कहीं तिसरे दर्जे में ही जाता हूँ। अमेरिका डेक में जाऊँगा।''

नारायण हेमचंद्र की सादगी तो उनकी अपनी ही चीज थी। उनकी निखालिसता भी वैसी ही थी। अभिमान उन्हें छू तक नहीं गया था। लेकिन लेखक के रूप में अपनी शक्ति पर उन्हें आवश्यकता से अधिक विश्वास था।

हम रोज मिला करते थे। हममें विचार और आचार की पर्याप्त समानता थी। दोनों अन्नाहारी थे। दुपहर का भोजन अकसर साथ ही करते थे। यह मेरा वह समय था, जब मैं हफ्ते के सत्रह शिलिंग में अपना निर्वाह करता और हाथ से भोजन बनाता था। कभी मैं उनके मुकाम पर जाता, तो किसी दीन वे मेरे घर आते थे। मैं अंग्रेजी ढंग की रसोई बनाता था। उन्हें देशी ढंग के बिना संतोष ही न होता था। दाल तो होनी ही चाहिये। मैं गाजर वगैरा का झोल (सूप) बनाता, तो इसके लिए वे मुझ पर तरस खाते। वे कहीं से मूँग खोजकर ले आये थे। एक दिन मेरे लिए मूँग पकाकर लाये और मैंने उन्हें बड़े चावसे खाया। फिर तो लेने-देने का हमारा यह व्यवहार बढ़ा। मैं अपने बनाए पदार्थ उन्हें चखाता और वे अपनी चीजें मुझे चखाते।

उन दिनों कार्डिनल मैनिंग का नाम सबकी जबान पर था। डक के मजदूरों की हड़ताल थी। जॉन बर्न्स और कार्डिनल मैनिंग के प्रयत्न से हड़ताल जल्दी ही खुल गयी। कार्डिनल मैनिंग का सादगी के बारे में डिज़रायेलीने जो लिखा था, सो मैंने नारायण हेमचंद्र को सुनाया।

"तब तो मुझे इन साधु पुरुष से मिलना चाहिये।"

"वे बहुत बड़े आदमी हैं। आप कैसे मिलेंगे?"

"जैसे मैं बतलाता हूँ। तुम मेरे नाम से उन्हें पत्र लिखो। परिचय दो कि मैं लेखक हूँ और उनके परोपकार के कार्य का अभिनन्दन करने के लिए स्वयं उनसे मिलना चाहता हूँ। यह भी लिखो की मुझे अंग्रेजी बोलना नहीं आता, इसलिए मुझे तुमको दुभाषिये के रूप में ले जाना होगा।"

मैंने इस तरह का पत्र लिखा। दो-तीन दिन में कार्डिनल मैनिंग का जवाब एक कार्ड में आया। उन्होंने मिलने का समय दिया था।

हम दोनों गये। मैंने प्रथा के अनुसार मुलाकाती पोशाक पहन ली थी। पर नारायण हेमचंद्र तो जैसे रहते थे वैसे ही रहे। वही कोट और वही पतलून। मैंने मजाक किया। मेरी बात को उन्होंने हँसकर उड़ा दिया और बोले:

"तुम 'सभ्य' लोग सब डरपोक हो। महापुरुष किसी की पोशाक नहीं देखते। वे तो उसका दिल परखते हैं।"

हमने कार्डिनल के महल में प्रवेश किया। घर महल ही था। हमारे बैठते ही एक बहुत दुबले-पतले, बूढ़े, ऊँचे पुरुषने प्रवेश किया। हम दोनों के साथ हाथ मिलाये। नारायण हेमचंद्र का स्वागत किया।

"मै आपका समय नहीं लूँगा। मैंने आपके बारे में सुना था। हड़ताल में आपने जो काम किया, उसके लिए आपका उपकार मानना चाहता हूँ। संसार के साधु पुरुषों के दर्शन करने का मेरा नियम है, इस कारण मैंने आपको इतना कष्ट दिया।" नारायण हेमचंद्र ने मुझ से कहा कि मैं इन वाक्यों का उल्था कर दूँ।

"आपके आने से मुझे खुशी हुई है। आशा है यहाँ आप सुखपूर्वक रहेंगे और यहाँ के लोगों का परिचय प्राप्त करेंगे। ईश्वर आपका कल्याण करे।" यह कहकर कार्डिनल खड़े हो गये।

एक बार नारायण हेमचंद्र मेरे यहाँ धोती-कुरता पहनकर आये। भली घर-मालकिनने दरवाजा खोला और उन्हें देखकर डर गयी। मेरे पास आकर (पाठकों को याद होगा कि मैं अपने घर तो बदलता ही रहता था। इसलिए यह मालकिन नारायण हेमचंद्र को नहीं जानती थी।) बोली: "कोई पागल-सा आदमी तुम से मिलना चाहता है" मैं दरवाजे पर गया, तो नारायण हेमचंद्र को खड़ा पाया। मैं दंग रह गया। पर उनके मुँह पर तो सदा की हँसी के सिवा और कुछ न था।

"क्या लड़कों ने आपको तंग नहीं किया?"

जवाब में वे बोले: "मेरे पीछे दौड़ते रहे। मैंने कुछ ध्यान नहीं दिया, इसलिए वे चुप हो गये।"

नारायण हेमचंद्र कुछ महिने विलायत रहकर पेरिस गये। वहाँ फ्रेंच का अध्ययन शुरु किया और फ्रेंच पुस्तकों का अनुवाद करने लगे। उनके अनुवाद को जाँचने लायक फ्रेंच मैं जानता था, इसलिए उन्होंने उसे देख जाने को कहा। मैंने देखा कि वह अनुवाद नहीं था, केवल भावार्थ था।

आखिर उन्होंने अमेरिका जाने का अपना निश्चय पूरा किया। बड़ी मुश्किल से डेक का या तीसरे दर्जे का टिकट पा सके थे। अमेरिका में धोती-कुरता पहनकर निकलने के कारण 'असभ्य पोशाक पहनने' के अपराध में वे पकड़ लिये गये थे। मुझे याद पड़ता है कि बाद में वे छूट गये थे।

– 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से साभार, पृष्ठ क्र.६६-७०

Chronology of Mahatma Gandhi January - March 1918

January 4 & 5 : Gandhiji held talks with representatives of Ahmedabad mill-owners and mill-workers.

January 10 : Gujarat Sabha under Gandhiji's advice asked Kheda farmers to refrain from paying land revenue.

January 14 : Discussed Champaran Agrarian Bill with L.F. Morshead, Commissioner of Tirhut Division. Kheda Collector in statement criticized Gujarat Sabha's advice to peasants to withhold land revenue, threatened action against defaulters.

January 16 : Government of Bombay issued statement that Collector of Kheda had granted revenue relief in fit cases.

January 21 : Gandhiji wrote to Tagore for his views on adopting Hindi as the *lingua franca*.

January 24 : Represented to Revenue Secretary of Bihar and Orissa that material alterations in Champaran Agrarian Bill be made only in consultation with raiyats' representative.

February 8 : Advised Ahmedabad mill-hands to be reasonable in their demands and seek settlement without creating bitterness.

February 14 : Along with Shankarlal Banker and Vallabhbhai Patel, represented workers on Arbitration Board to decide wage increase in lieu of Plague Bonus.

Before February 19 : Contributed foreword to a translation of Gokhale's speeches.

February 19 : Explained to mill-hands his responsibility in regard to their trouble. The Servant of India commenced publication on third death anniversary of Gokhale.

February 20 : Gandhiji presided over annual gathering of Bhagini Samaj in Bombay, spoke on women's education.

February 22 : Ahmedabad mill-owners declared general lockout.

February 25 : Gandhiji returned to Ahmedabad from Nadiad.

February 26 : Commenced issuing leaflets on mill-hands' struggle, also practice of addressing mill-workers daily under babul tree on Sabarmati banks.

March 1 : Workers' advisers pledged to feed and clothe strikers in need.

March 7 : Gandhiji discussed lock-out situation with coworkers.

March 12 : Lock-out at mills lifted, strike by mill-workers started.

March 14 : Mill-workers' reproachful remarks about their plight brought to Gandhiji's knowledge.

March 18 : Announced settlement between mill-owners and workers; A.B. Dhruva appointed arbitrator.

March 19 : In leaflet No. 17, last of the series, Gandhiji gave implications of settlement; joined mill-workers' procession.

- Collected Works of Mahatma Gandhi

भारत में अनशन का पहला प्रयोग (अहमदाबाद मिल-मजदूर सत्याग्रह के संदर्भ में)

'खोज गाँधीजी की' के महात्मा गाँधी ने साबरमती नदी के किनारे आश्रम की स्थापना की और अहमदाबाद को कर्मभूमि के रूप में चुना। अहमदाबाद में और अहमदाबाद से गाँधीजी ने कई ऐतिहासिक सत्याग्रह किए तथा कई ऐतिहासिक संस्थाओं की स्थापना भी की है। सन् १९१८ में अहमदाबाद में गाँधीजी ने मिल-मजदूर आंदोलन को एक अनोखी पद्धति से अंजाम दिया। यह इतिहास की पहली ही घटना थी कि किसी आंदोलन को अनशन के माध्यम से सफल किया गया हो। जनवरी २०१८ में अहमदाबाद सत्याग्रह की शताब्दी वर्ष आ रही है। आइए, इस अवसर पर सौ साल पहले घटी घटना के पीछे गाँधीजी की कल्पना और कार्य-प्रणाली को जानते हैं। **- संपादक**

गुजरात क्षेत्र में अहमदाबाद पहले से ही सबसे महत्त्वपूर्ण शहर बना रहा। समय की अवधि में, अहमदाबाद ने खुद को कपड़ा उद्योग के रूप में स्थापित किया और 'ईस्ट के मैनचेस्टर' का उपनाम अर्जित किया। श्रमिकों के अधिकार, नागरिक अधिकार और राजनीतिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देने के लिए यह सिविल अवज्ञा के कई अभियानों का केंद्र था।

सन् १९१७ की बरसात में जब अहमदाबाद में भयंकर प्लेग फैला हुआ था, तब मजदूर अहमदाबाद छोड़कर चले न जाय, इसके लिए अहमदाबाद स्थित मिल-मालिकों द्वारा उन्हें वेतन के ७० से ८० फीसदी के बराबर प्लेग बोनस दिया गया था। प्लेग बंद हो जाने के बाद भी उस समय हो रहे युरोप के महायुद्ध के कारण बढ़नेवाली सख्त महंगाई की वजह से वह बोनस जारी रहा। बाद में जब मालिकों ने बोनस बंद करने की नोटिस निकाली, तब बुनाई विभागवाले मजदूरों में खलबली मची और वे अनुसूया बहन से मिलकर यह माँग करने लगे कि प्लेग बोनस के बजाय महंगाई की वृद्धि कम से कम ५० फीसदी मिलनी चाहिए। स्थिति दिन-दिन गंभीर रूप धारण करती जा रही थी।

मिल मालिक तथा मजदूरों के संदर्भ में पंच का फैसला दर्शाता महात्मा गाँधी का बयान

गाँधीजी की मुंबई यात्रा के दौरान वहाँ सेठ अंबालाल साराभाई से उनकी भेंट हुई। अंबालाल साराभाई ने अपने पास के कुछ कागज-पत्र दिखाकर गाँधीजी से कहा कि अहमदाबाद के मिल-मजदूरों में बोनस के बारे में असंतोष है और डर है कि कहीं वे हड़ताल न कर दें। यदि ऐसा हुआ, तो उसका नतीजा अच्छा न होगा। इसलिए उन्होंने गाँधीजी को सलाह दी कि वे इस सवाल को अपने हाथ में लें। अंबालाल साराभाई ने जो भय जाहिर किया, वह गाँधीजी को गंभीर मालूम हुआ। उन्होंने सोचा 'यदि सचमुच हालत ऐसी ही है, तब तो सारे अहमदाबाद शहर की शांति खतरे में पड़ सकती है।'[१] अतएव गाँधीजी ने निश्चय किया कि वे इस संकट को टालने की भरसक कोशिश करेंगे।

गाँधीजी ने अहमदाबाद पहुँचकर मजदूरों और मिल-मालिकों की स्थिति और दृष्टि को समझना शुरू किया। हालत दिन-ब-दिन नाजुक होती जा रही थी। सरकार के पास भी सारा मामला पहुँच चुका था। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि मिल-मालिकों और प्रशासन के अधिकारियों को भी यह अहसास हो गया था कि इस गंभीर मामले में केवल गाँधीजी ही हैं जिनके द्वारा इस स्थिति का हल निकाला जा सकता है। इस सिलसिले में अहमदाबाद के तत्कालीन कलेक्टर ने गाँधीजी को एक खत लिखा था जिसमें उन्होंने दर्शाया कि बोनस के प्रश्न को लेकर मिल-मालिकों और मजदूरों के दरमियान एक बहुत ही गंभीर हालत पैदा हो जाने का अंदेशा है। मालिक लोग मिलें बंद करने की धमकी दे रहे हैं, इससे लोगों को बहुत तकलीफ और दुःख होने की आशंका है। ... मुझे पता चला है कि अगर मिल-मालिक किसी की सलाह पर ध्यान देंगे, तो वह आपकी ही सलाह होगी।[२]

गाँधीजी कलेक्टर, मिल-मालिक और मजदूर सबसे मिले। सबके साथ उन्होंने सलाह-मशविरा किया। अंत में दोनों पक्षों ने यह स्वीकार किया कि इस झगड़े का फैसला पंचों द्वारा कराया जाए। पंचों में मालिकों की ओर से सेठ अंबालालभाई, सेठ जगाभाई दलपतभाई और सेठ चंदुलाल एवं मजदूरों की ओर से गाँधीजी, वल्लभभाई पटेल और शंकरलाल बैंकर और अध्यक्ष के स्थान पर कलेक्टर साहब नियुक्त किए गए। इसके बाद कुछ मिलों में गलतफहमी से मजदूरों ने हड़ताल कर दी। मजदूरों को भूल बता दी गई, तो वे उसे सुधारने को तैयार हो गए। परंतु मालिकों ने कहा कि मजदूरों ने पंच मुकर्रर हो जाने पर भी हड़ताल कर दी, इसलिए अब हम पंच की बात रद्द करते हैं। इसी के साथ उन्होंने यह निश्चय किया कि जो मजदूर वेतन की २० फीसदी वृद्धि पर रहना न चाहते हों उन्हें निकाल दिया जाय। बुनाई विभागवालों ने इतनी वृद्धि मंजूर नहीं की, तो मालिकों ने उनका लॉक आउट (कामबंदी) शुरू कर दिया। इस संकट को टालने के लिए गाँधीजी ने अथक परिश्रम किया; लेकिन मिल-मालिक मजदूरों की गलती पर ही जोर देते रहे और खुद जरा भी टस से मस न हुए। पंचों ने मालिकों और मजदूरों का हित सोचकर और तमाम परिस्थिति की जांच करके तय किया कि ३५ फीसदी वृद्धि उचित है। मजदूरों को इस प्रकार की सलाह देने से पहले पंच ने मालिकों को अपनी इस राय का समाचार देकर सूचित किया कि इस मामले में उन्हें कुछ कहना हो तो कहें। परंतु मालिकों ने अपना विचार नहीं बताया। इसलिए मजदूरों को ३५ फीसदी वृद्धि माँगने की सलाह दी गई। इसे उन्होंने मान लिया और निश्चय किया कि जब तक ३५ फीसदी वृद्धि न मिले, तब तक काम पर न जाएं। इस प्रकार लड़ाई शुरू हुई। गाँधीजी ने रोज पत्रिकाएं निकालकर और मजदूरों की सभा में वह पत्रिका सुनाकर और उस पर विवेचन करके मजदूरों को टेक, एकता, हिम्मत, मजदूरी की प्रतिष्ठा, पूंजी से श्रम के अधिक महत्त्व और प्रतिज्ञा की पवित्रता और गंभीरता की शिक्षा देना शुरू कर दिया। और इस प्रकार लड़ाई को धार्मिक स्वरूप देने के उपाय करने लगे।

मजदूरों के साथ नजदीक से जुड़ने के लिए गाँधीजी ने भिन्न-भिन्न उपायों से सजीव संबंध बढ़ाने का प्रयास किया ताकि उनमें घुलने-मिलने की कोशिश की जाय। इसके लिए निम्न तरीके आजमाए थे। १) मजदूरों के घर-घर जाकर उनकी समूची हालत के बारे में पूछताछ करने, उनकी रहन-सहन में कोई कमी हो तो उसे सुधारने, संकट में उन्हें सहायता और सलाह देने तथा उनके सुख-दुःख में भरसक हाथ बंटाने की कोशिश करना। २) लड़ाई के दरमियान अपने रुख और रवैये के बारे में मजदूरों को कुछ सलाह-सूचना प्राप्त करनी हो, तो उसका ऐसा प्रबंध करना जिससे वह उन्हें तुरंत प्राप्त हो सके। ३) रोज एक नियत स्थान पर मजदूरों की आम सभा करके उनको लड़ाई के सिद्धांत और उसका रहस्य समझाना।

४) मजदूरों के लिए 'सुबोध पत्रिकाएं' निकालना, ताकि लड़ाई के ये सिद्धांत और इनका रहस्य उनके दिल में सदा के लिए अंकित हो जाय; उन्हें सरल और उच्च कोटि का साहित्य हमेशा मिलता रहे।

गाँधीजी की कार्य-प्रणाली अद्वितीय थी उनके साथ रहने वाले एवं सत्याग्रह में सम्मिलित होने वाले सभी लोगों को वे सामाजिक शिक्षा प्रदान करते थे। चाहे वे अनुयायी हों या अनुग्रही दोनों को शिक्षा की अनुभूति प्राप्त होती थी। सत्याग्रह की पद्धति बदला लेने के लिए नहीं किंतु बदलाव लाने के लिए है यह गाँधीजी ने सिद्ध कर दिखाया। इसलिए वे कहते हैं कि आप मुझे सत्याग्रह की दशा में अपनी क्रियाशीलताएँ बंद कर देने के लिए कहें तो वह मेरे जीवन को समाप्त कर देने के समान होगा।[३]

गाँधीजी लोगों का प्रबोधन कर ही रहे थे, लेकिन स्थिति में अचानक बदलाव आया। अब तक मिल-मालिकों ने 'लॉक आउट' का ऐलान कर रखा था, इसलिए मजदूर किसी भी प्रकार काम पर जा ही न सकते थे। उसके बाद 'लॉक आउट' को रद्द कर दिया और कहा कि जो मजदूर २० प्रति सैकड़ा भत्ता लेकर काम पर आने को तैयार हों, उनके लिए मिलें खुली हैं। इसका असर यह हुआ कि कच्चे दिल के मजदूर काम पर चले गए। इन्हीं दिनों गाँधीजी के पास यह शिकायत आई कि कुछ ज्यादा उत्साही मजदूर कच्चे-पोचे मजदूरों को डरा-धमकाकर काम पर जाने से रोकते हैं। गाँधीजी इस चीज को कभी सह नहीं सकते थे। वे तो शुरू से कहते आए थे कि मजदूरों के हृदय को उनकी भावनाओं को, प्रभावित करके उन्हें अपनी आन पर अड़े रहने को कहो; जोर-जबरदस्ती या जुल्म करके नहीं। दूसरे दिन शुद्ध प्रामाणिकता से छलकती हुई एक पत्रिका निकाली गई: 'मजदूरों की लड़ाई का सारा आधार उनकी न्यायोचित मांग और न्यायपूर्ण कार्य पर है। अगर मांग अनुचित है, तो मजदूर कभी जीत नहीं सकते। मांग के उचित होने पर भी अगर उसकी पूर्ति के लिए वे अन्याय का उपयोग करेंगे, झूठ बोलेंगे, दंगा-फसाद मचायेंगे, दूसरों को दबायेंगे या आलस से काम लेंगे, और इस तरह परेशान होंगे, तो भी अंत में जीत नहीं पायेंगे।[४] मूल बात यह है कि हम सत्य पर अडिग हों, साधन शुद्धि पर हमारा भरोसा हो और व्यापक लोकहित पर हमारा बराबर ध्यान लगा रहे। गाँधीजी अपने जीवन में साधन शुद्धि के प्रति संवेदनशील रहे, और यह सत्याग्रह का सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। शुद्ध साधन लोगों के हृदय को छूता है। आहिस्ता-आहिस्ता लोग अपने आपको उस साधन में समायोजित करते हैं, क्योंकि शुद्ध साधन केवल बाह्य परख को नहीं छूता बल्कि अंदरूनी अहसास को स्पर्श करता है। यह केवल अपने सहयोगियों पर ही काम करता है ऐसा नहीं है बल्कि यह विरोधियों पर भी उनती ही असरकारकता से कार्य करता है। अंत में शुद्ध साध्य की प्राप्ति होती है। यहाँ परिवर्तन का सिद्धांत कार्य करता है जिससे शाश्वत परिवर्तन को फलीभूत किया जा सकता है।

इस आंदोलन के करीब बाईस दिन बीत गए थे। किसी भी तरह का कोई मार्ग दिखाई नहीं दे रहा था। मजदूरों को खाने का टोटा पड़ने लगा, गंभीर स्थिति वाले मजदूरों के लिए कुछ काम ढूंढा गया। एक पत्रिका में गाँधीजी ने मजदूरों को वचन दिया था कि, इस लड़ाई में जिन्हें भूखों मरने की नौबत आ जायगी और जिन्हें कोई काम नहीं मिल सकेगा, उन्हें ओढ़ाकर हम ओढ़ेंगे और खिलाकर हम खायेंगे। थोड़े ही दिनों में इन वचनों के पालन करने का अवसर आ गया। गाँधीजी के कानों पर आलोचना की बातें आईं कि, गाँधीजी और अनसूयाबहन को क्या? उनके लिए मोटर आने-जाने को और अच्छा खाने-पीने को है। परंतु हमारे तो प्राण निकले जा रहे हैं। यह सुनकर गाँधीजी का हृदय विदीर्ण हो गया। तेईसवें दिन सुबह जब सभा में गए, तब पहले से ही दु:खी हुए हृदय और अपनी करुणार्द्र दृष्टि से उन्होंने क्या देखा? वे कहते हैं कि अपने मुख पर झलकते हुए अटल आत्म-निश्चय की भावना से हमेशा नजर आनेवाले एकाध हजार आदमी देखे। एक क्षण में अंतर का संकल्प हो गया और हजार सभाजनों से उन्होंने कह दिया कि तुम अपनी प्रतिज्ञा से विचलित हो जाओ, यह मुझसे क्षणभर भी बरदाश्त नहीं हो सकता। ''जब तक तुम्हें ३५ प्रतिशत वृद्धि न मिले या तुम सब हार न जाओ, तब तक मैं न भोजन करूंगा और न मोटर काम में लूंगा।''[५] इस प्रतिज्ञा का असर इतना तो प्रबल हुआ कि जो मजदूर सभा में नहीं आए थे, वे भी मजबूत बन गए। मिल-मालिकों पर भी गाँधीजी के इस उग्र निश्चय का जबरदस्त प्रभाव पड़ा। यद्यपि उनका खयाल था कि हम एक बार मजदूरों की बात मान लेंगे, तो वे सिर पर चढ़ जाएंगे, फिर भी बहुत से मालिकों के दिल में गाँधीजी के प्रति प्रेम और पूज्य भाव था। वे आकर कहने लगे कि, 'इस बार हम आपकी खातिर मजदूरों को ३५ फीसदी दे देते हैं।' गाँधीजी ऐसा करने से साफ मना करते और कहते मुझ पर दया करके नहीं, परंतु मजदूरों की प्रतिज्ञा का आदर करके, उनके साथ न्याय करने के लिए ३५ फीसदी दीजिए। फिर भी मेरे उपवास से मालिकों में दबाव पड़ रहा है तो यह उपवास में दोष है। लेकिन एक तरफ दस हजार मजदूरों की प्रतिज्ञा के टूटने से होनेवाले अध:पतन को रोकने की बात थी और दूसरी ओर मालिकों पर पड़नेवाले दबाव का दोष आता था। यह दोष उन्होंने सिर पर ले लिया और मानो मालिकों के अपराधी हों, इस तरह गरीब बनकर उनके साथ समझौते की चर्चा करने लगे। वे हमेशा यह मानते थे कि ''यदि हम न्याय चाहते हैं तो अपने प्रतिद्वन्द्वी को भी न्याय देना चाहिए। सत्याग्रही का यही प्रथम कर्तव्य है।''[६] उपवास के चौथे दिन मिल-मालिकों और मजदूरों के बीच सुखद समझौता हुआ।

अनशन के माध्यम से सत्याग्रह को सफल करने का यह पहला प्रयोग था, इससे यह साबित हुआ कि शुद्ध अनशन के माध्यम से भी कोई समस्या का समाधान प्राप्त किया जा सकता है। गाँधीजी ने उपवास को सत्याग्रह के शस्त्रभंडार का एक महाशक्तिशाली शस्त्र बनाया। उस हथियार को वे पवित्र उद्देश्यों के काम में लाते थे। इससे अहिंसक पद्धति में एक और साधन का इजाफा हुआ और यह यकीन दिलाया की परिवर्तन लाने के लिए अहिंसक साधन बेहद असरकारक और शाश्वत होते हैं। वे मानते थे कि सर्वोत्कृष्ट कार्य को सिद्ध करने के लिए भी हिंसात्मक पद्धति का प्रयोग करने का मैं कट्टर विरोधी हूँ। ...मैंने अनुभव से यह सिद्ध किया है कि शाश्वत कल्याण असत्य और हिंसा में से कभी निर्माण नहीं कर सकते। गाँधीजी नये प्रयोगों से परिपूर्ण जीवन व्यतीत करते रहे, वे हमारे लिए ऐसे क्षेत्र के प्रयोगों की देन छोड़ गए हैं जो अब तक अज्ञात था।

अहमदाबाद में मिल-मालिकों और मजदूरों में गाँधीजी के नेतृत्व में एक छोटी किंतु दोनों पक्षों में जो मिठास कायम रही और उसके जो जबरदस्त परिणाम हुए हैं उन्हें देखते हुए महत्त्व की लड़ाई हो गई। इसके परिणाम बहुत सुंदर हुए हैं, इस लड़ाई में पंच की मध्यस्थता से दोनों पक्षों के झगड़ों को निपटा लेने के सिद्धांत का जो बीजारोपण हुआ, उसे गाँधीजी ने जतन करके पोषित किया और उसमें मिल-मालिक संघ और मजूर महाजन संघ ने अच्छा साथ दिया। इसके परिणाम स्वरूप ही अहमदाबाद का मजूर महाजन संघ हिंदुस्तान में एक अद्वितीय संस्था बन गई। आज मजदूरों के सामने अमुक वेतन वृद्धि या अमुक सुविधाएं प्राप्त करने का ही ध्येय नहीं रहा, परंतु मजदूर यह समझने लगे हैं कि जैसे पूंजी धन है, वैसे मजदूरी भी धन है, बल्कि उससे अधिक कीमती धन है। और इस समझ में मिलों के प्रबंध तक में मालिकों के साथ समान भाग रखने की भावना का उदय हुआ।

संदर्भ –

१) एक धर्मयुद्ध, महादेवभाई देसाई, पृ. ४; २) एक धर्मयुद्ध, महादेवभाई देसाई, पृ. ५; ३) सत्याग्रह और विश्व शांति, रंगनाथ दिवाकर; ४) एक धर्मयुद्ध, महादेवभाई देसाई, पृ. सं. २४; ५) सरदार वल्लभभाई, नरहरि परीख, पृ. सं. १३४; ६) सत्याग्रह, श्रीरामनाथ पृ. सं. २०; ७) लोकशाहि साची अने भ्रामक (गुज.), गाँधीजी, पृ. सं. ४०.

३० जनवरी १९४८ – मनु बहन गाँधी की डायरी से

'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है।' यह केवल उद्धरण नहीं है अपितु एक व्यक्ति द्वारा मानवता के उद्धार के लिए किया गया समर्पण है। पृथ्वी पर मानव की कहानी का सबसे महान तथ्य उसकी भौतिक उपलब्धि नहीं है, न ही उसके द्वारा बनाए गए और तोड़े गए साम्राज्य बल्कि सत्य और बेहतरी की खोज में युगांतर तक उसकी आत्मा का विकास है। महात्मा गाँधी ने इन्हीं बेहतरी के लिए अपना जीवन अर्पित किया है।

गाँधीजी कहा करते थे कि मेरी मृत्यु अगर किसी बीमारी से भी होती है तो मुझे महात्मा मत कहिए। ३० जनवरी १९४८ का दिन उसका प्रमाण देता है। उस दिन बापू सायं प्रार्थना के लिए जा रहे थे, यूं कहे मानों वे इश्वर में लीन होने जा रहे थे।

उनके अंतिम दिन की घटना को मनु बहन गाँधी द्वारा लिखित डायरी के पन्नों से हमारे पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं।

– संपादक

नियमानुसार बापू प्रार्थना के लिए जगे, मुझे भी जगाया। ...प्रार्थना के बाद मैं बापू को बरामदे से भीतर ले आई। उन्हें कपड़ा ओढ़ाया। बापू कल रात तैयार किए हुए कांग्रेस-संविधान के मसविदे का संशोधन करने बैठ गए। नियमानुसार साढे चार बजे गरम जल, शहद और नींबू और साढ़े पांच बजे संतरे का रस सौलह औंस लिया। अभी उपवास की कमजोरी तो है ही। लिखते-लिखते थक जाने से बापू बीच में ही सो गए और मैंने उनके पैर भी दबाए।

पू. किशोरलाल भाई को कल जो पत्र लिखा था, नकल न हो सकने के कारण वह बापू के कागज़ों में ही पड़ा रह गया। बापू को यह अच्छा नहीं लगा मैंने सहज ही पूछा कि 'इसमें एक पंक्ति यह लिख दूँ कि हम लोग दूसरी को वर्धा जाने वाले हैं?' तो बापू ने कहा कल की कौन जानता है? अगर जाना तय ही हो जाएगा, तो आज प्रार्थना में कह दूंगा। फिर रात में रिकार्ड रिले होगा, तो उसमें वह आ ही जाएगा। फिर भी इस तरह चिट्ठी पड़ी रहनी नहीं चाहिए थी। भले ही यह काम बिसेन का हो, लेकिन तू मेरे किसी भी काम से मुक्त नहीं हो सकती। दूसरों की गलती होने पर भी मैं उसे तेरी ही गलती मानता हूँ, अगर तू उसे स्वीकार करें। मैंने कहा 'मुझे तो स्वीकार करना ही होगा।' बापू प्रसन्न हो गए।

महात्मा गाँधी के पार्थिव शरीर के सामने गीता पाठ करते हुए मनु गाँधी व अन्य

महात्मा गाँधी, मनु गाँधी, मृदुला साराभाई एवं अन्य, बिहार १९४७

आठ बजे नियमानुसार मालिश और स्नान हुआ। मालिश के समय अखबार देखें। बंगाली पाठ किया। फिर मालिश के कमरे से बाथरूम में लाया गया। उस समय उन्होंने प्यारेलाल जी से कहा कल रात मैंने कांग्रेस का मसविदा हरिजन में भेजने के लिए बना रखा है। उसे ठीक से देख लें और विचारों की जो कमी रह गई हो, उसे पूरी कर दें। बहुत ही थके-माँदे मैंने उसे तैयार किया है।

बाथ से निकलने के बाद वजन किया गया १०९.५० पौंड हुआ। भोजन में उबाला हुआ शाक, बारह औंस दूध, एकआध मूली और करीब चार-पाँच पके टमाटर और चार संतरों का रस लिया। खाते समय प्यारेलाल जी के साथ नोआखाली के विषय में बातें हुईं। उन्होंने आबादी की अदला-बदली के बारे में बापू से पूछा, जिस पर बापू ने साफ-साफ कह दियाः हम लोगों ने तो 'करेंगे या मरेंगे' यह मंत्र लेकर ही नोआखाली का वरण किया है। भले ही आज मैं यहाँ बैठा हुआ हूँ, पर काम तो नोआखाली का ही चल रहा है। हमें जनता को भी इसके लिए तैयार करना चाहिए कि वह अपनी इज्जत और सम्मान बनाए रखने के लिए बहादुरी के साथ वहीं रहे। भले ही अंततः वहाँ गिने-गिनाए लोग ही रह जाए, लेकिन जहाँ दुर्बलता से ही सामर्थ्य पैदा करनी हो, वहाँ दूसरा उपाय ही क्या है? आखिर सशस्त्र युद्ध में भी साधारण सिपाहियों का सफाया होता ही है। फिर अहिंसक युद्ध में उससे भिन्न और हो ही क्या सकता है? और उन्हें नोआखाली जाने का ही सुझाव दिया। फिर पैरो में घी मलवाते हुए बापू ने थोड़ा आराम किया। थोड़ी देर सोकर पुनः उठे और बाथरूम में जाने के लिए बाहर के पटरे पर से आ रहे थे। मैंने कहाः 'बापू! अकेले ही अकेले आ रहे हैं, तो कैसे लग रहे हैं?' (कमजोरी के कारण वे बिना किसी का सहारा लिए चलते नहीं थे।) बापू ने कहाः क्यों, अच्छा दिखता है न? 'एकला चलो रे!'

डॉ. सिल्वा और उसकी लड़की लंका में मुख्य प्रतिनिधि थे। उन्हें अपना आटोग्राफ दिया। दोपहर में बिसेन भाई के साथ चिट्ठियों का रुका हुआ काम पूरा करने के लिए कहा। २ बजे मिट्टी ली। पैर दबाए। बापू ने मिट्टी उतारी। हम लोग बापू से छुट्टी लेकर शहर में एक संबंधी के यहाँ मिलने गए। वहाँ से ४.१५ बजे लौटे।

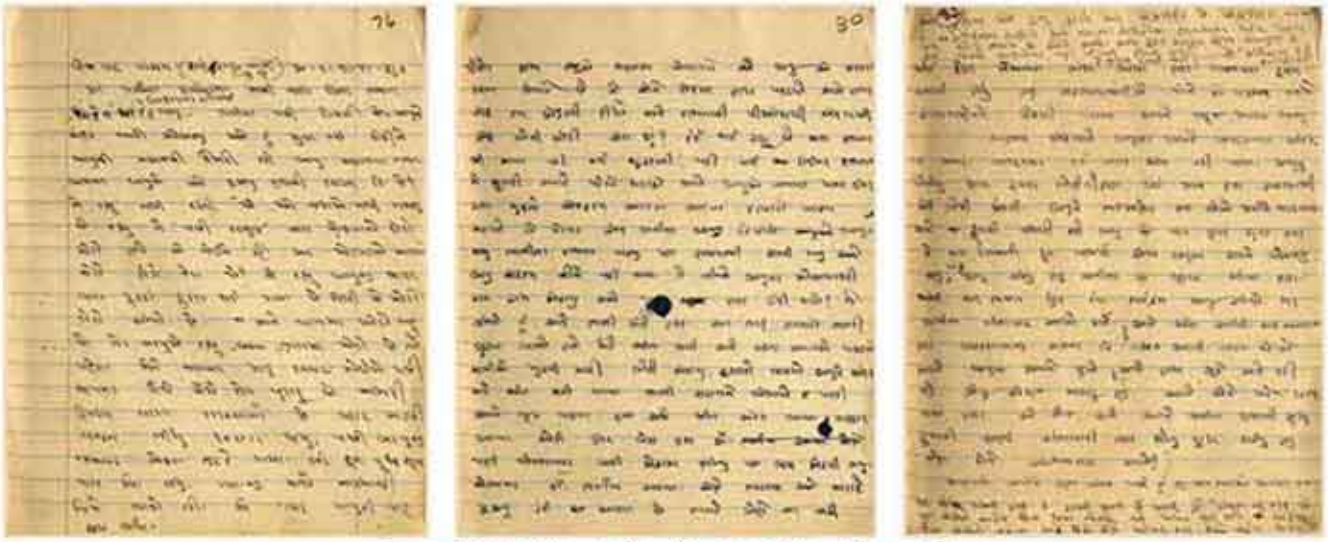

३० जनवरी १९४८ की घटना को दर्शाते मनु बहन की डायरी के कुछ पन्ने

बापू और सरदार दादा बातचीत कर रहे थे। ... काठियावाड़ के बारे में भी चर्चा हुई। इसी बीच काठीयावाड़ के नेता रसिक भाई पारीख और ढेबर भाई भी आ गए। उन्हें बापू से मिलना था। लेकिन आज तो एक क्षण खाली नहीं है। फिर भी मैंने उनसे कहा कि 'बापू से पूछकर समय तय किए देती हूँ।' बापू और सरदार दादा बातों में एकदम तल्लीन थे। मैंने पूछा तो कहने लगेः उनसे कहो कि यदि जिंदा रहा, तो प्रार्थना के बाद टहलते समय बातें कर लेंगे। मैंने उनसे प्रार्थना के लिए रुक जाने को कहा। कारण यदि वे प्रार्थना के बाद तत्काल न मिल लेंगे, तो और कोई घुस ही जाएगा और फिर बातें न कर पायेंगे। वे रुक गए और बापू के कमरे में जा बैठे।

बापू सरदार दादा के साथ बातचीत में इतने तन्मय हो गए थे कि दस मिनट देर हो गई।

मैंने अपने हाथ में रोज की तरह कलम, बापू की माला, पीकदानी, चश्मे का केस और जिस पर प्रवचन लिखती हूँ, वह नोटबुक ले ली। दस मिनट देर हो जाने के लिए बापू ने रास्ते में नापसंदगी जाहिर कीः आप लोग ही तो मेरी घड़ी हैं न? फिर मैं घड़ी के लिए क्यों रुका रहूँ? खासकर आजकल बापू घड़ी देखते ही नहीं। समयानुसार एक के बाद एक सारा काम यों ही कर लिया करते हैं। घड़ी को चाभी भी हम लोगों में से ही कोई दे दिया करता था। इसीलिए उन्होंने यह कहा। मैंने कहा कि 'बापू! आपकी घड़ी बेचारी उपेक्षा से दुबली होती होगी।' इसी के उत्तर में उन्होंने यह बात कही। विनोद तो किया ही, पर साथ ही यह भी कहा कि मुझे ऐसी देरी बिलकुल पसंद नहीं। प्रार्थना में दस मिनट देर हो गई, इसमें आप लोगों का ही दोष है। सरदार दादा दो-चार दिनों बाद आए थे और ऐसे गंभीर प्रश्नों पर चर्चा कर रहे थे कि टोकने की हिम्मत ही नहीं हुई, यह भी बापू को पसंद नहीं पड़ा। उन्होंने कहाः नर्सों का तो धर्म है कि साक्षात ईश्वर भी बैठा हो, तो भी वे अपना धर्म, अपना कर्तव्य पूरा करें। किसी रोगी को दवा पिलाने का समय हो गया हो और किसी भी कारण यह विचार करते रहें कि उसके पास कैसे जाया जाए, तो रोगी मर ही जाएगा। यह भी ऐसी ही बात है। प्रार्थना में एक मिनट की देर भी मुझे खल जाती है।

महात्मा गाँधी के पार्थिव शरीर का दर्शन करने आए जन समूह, नई दिल्ली १९४८

बापू चार सीढ़ियाँ चढ़े और सामने देख नियमानुसार हम लोगों के कंधे पर से अपने हाथ उठाकर उन्होंने जनता को प्रणाम किया और आगे बढ़ने लगे। मैं उनके दाहिनी ओर थी। मेरी ही तरफ से एक हृष्ट-पुष्ट युवक, जो खाकी वर्दी पहने और हाथ जोड़े हुए था, भीड़ को चीरता हुआ एकदम घुस आया। मैं समझी कि यह बापू के चरण छूना चाहता है; रोज ऐसा ही हुआ करता था। बापू चाहे जहाँ जाएं, लोग उनका चरण छूने और प्रणाम करने के लिए पहुँच ही जाते थे। हम लोग भी अपने ढंग से उनसे कहा करते कि बापू को यह ढंग पसंद नहीं। पैर छूकर चरण-रज लेनेवालों से बापू भी कहा ही करते कि मैं तो साधारण मानव हूँ। मेरी चरण-रज क्यों लेते हैं? इसी कारण मैंने इस आगे आने वाले आदमी के हाथ को धक्का देते हुए कहाः भाई! बापू को दस मिनट देर हो गई है, आप क्यों सता रहे हैं? लेकिन उसने मुझे इस तरह जोर से धक्का मारा कि मेरे हाथ से माला, पीकदानी और नोटबुक नीचे गिर गई। जब तक और चीजें गिरीं, मैं उस आदमी से जूझती ही रही। लेकिन जब माला भी गिर गई, तो उसे उठाने के लिए नीचे झुकी। इसी बीच दन-दन ...एक के बाद एक तीन गोलियाँ दगीं। अंधेरा छा गया! वातावरण धूमिल हो उठा और गगनभेदी आवाज हुई। हे राम! हे रा... कहते हुए बापू मानो सामने पैदल ही छाती खोलकर चले जा रहे थे। वे हाथ जोड़े हुए थे और तत्काल वैसे ही नीचे जमीन पर आ गिरे। कितने ही लोगों ने उस समय बापू को पकड़ने का यत्न किया। आभा बहन भी नीचे गिर गईं। एकदम उन्होंने बापू का सिर अपनी गोद में ले लिया। मैं तो समझ ही नहीं पाई कि आखिर यह क्या हो गया? यह सारी घटना घटते मुश्किल से ३-४ मिनट लगे होंगे। धुआँ इतना घना था। गोलियों की आवाज से मेरे कान बहरे हो गए। लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी।

सफेद वस्त्रों पर से रक्त की धार छूट पड़ी। बापू की घड़ी में ठीक ५ बजकर १७ मिनट हुए थे। मानो बापू जुड़े हुए हाथों से हरी घास में पृथ्वी माता की गोद में अपार निद्रा में सो रहे हों और हमारे अनुचित साहस पर नाराज न होने पर माफ कर देने के लिए कह रहे हों।

आज की समाज रचना

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संस्थापक स्व. डॉ. भवरलालजी जैन एक गंभीर लेखक एवं चिंतक थे। हम आपकी मराठी कृति 'आज की समाज रचना' से 'पुनर्विचार हेतु सहायक पार्श्वभूमि' विषयक यह महत्त्वपूर्ण लेख का शेष भाग पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं। **– संपादक**

समाज के शोषित तथा स्वतंत्र कृषक और आम लोगों के मन मे विद्रोह न जागे, कहीं उसके सड़क पर उतरने की स्थिति न आए यह बात समय रहते ऐश्वर्य एवं साधन संपन्न वर्ग को समझ लेनी चाहिए। कार्यकुशल, कर्तव्यपरायण, बुद्धिजीवी, व्यावसायिक और नौकरी पेशा वर्ग के लोग इस देश का नाम हर क्षेत्र में रोशन कर रहे हैं। प्रतिभासंपन्न, लक्ष्य-प्रेरित, मेधावी, जागरूक और उत्साही भारतीय युवक आज भी जिस देश में जाते है वहाँ अग्रणी के रूप में प्रसिद्धि पाते हैं। राष्ट्र-भक्ति और राष्ट्र-प्रेम की भावना से अभिभूत, नि:स्वार्थ, ईमानदारी, निष्ठापूर्वक सामाजिक उद्‌बोधन का काम करने वाले अपनी भूमिका के प्रति सजग हैं। प्रसार माध्यम के विचारक, कलाकार भले ही आज संख्या में थोड़े हैं। किंतु निस्वार्थ भाव से त्याग, तपश्चर्या, अपरिग्रह, अहिंसा, शांति, सेवा और अध्यात्म की शिक्षा देने वाला साधु-संतों का एक बड़ा वर्ग हमारे समाज के कल्याण में लगा हुआ है। परिवर्तन की प्रक्रिया में ऐसे तेजस्वी, तपस्वी और निग्रह लोगों का उपयोग आसानी से समाज को सुसंस्कारित, समुन्नत तथा समृद्ध बनाने के लिए किया जा सकता है।

बरजोर और दुर्जन शक्ति अति शीघ्र एक दूसरे के निकट आ जाते हैं। इसके विपरीत सज्जन शक्ति हृदय से एक-दूसरे से जुड़ नहीं पाती हैं। इस शक्ति के अंतर्गत अनेक क्षेत्रों के बुद्धिमान और कार्य कुशल घटक, व्यक्ति या संस्थाओं में व्यक्तिगत स्तर पर सैद्धांतिक मतभेद हों तो भी उन्हें दूर रख कर सार्वजनिक हितों के लिए प्रयत्नपूर्वक एक-दूसरे के समीप आना चाहिए। एक दूसरे के बीच दूरियाँ पैदा करने वाली दीवारें अधिकांशत: वैचारिक और सैद्धांतिक ही होती हैं। सज्जनशक्तियाँ अपने-अपने हृदय की सात्त्विक वृत्तियों को प्रबल करके वैचारिक उदारता, सदाशयता और सहृदयता को स्वीकार करना चाहिए जो समाज के लिए शुभ संकेत होगा। सज्जनशक्ति के घटक अधिकांशत: आदर्शवादी और पूर्णत्ववादी होते हैं। उन्हें जरा सा भी अनर्गल हस्तक्षेप अच्छा नहीं लगता है। अत: मामूली नैमित्तिक समझौते भी उन्हें स्वीकार्य नहीं होते है। किंतु समय की मांग देखते हुए भरतमिलाप जैसा कार्य करने में इन सज्जनों को हिचकिचाना नहीं चाहिए। जाति-पाँति, धर्म, वर्ण, पक्ष, धारणा, निष्ठा इन सभी दीवारों की परवाह किए बिना समविचारी, सतकर्मियों, संस्थाओं को समय पड़ने पर आपस में एक दूसरे का सहयोग करना चाहिए। जिनके पास कुछ विचार हैं – भले ही वे असत्य प्रतीत होते हो और उन विचारों के अनुयायी हों और जो धन के मोह के शिकार न हुए हों, ऐसे लोगों के मिथ्या प्रसंगों को भूल कर इन्हें भी सामाजिक कल्याण की भूमिकाओं में सहभागी बनाना चाहिए। ऐसे लोगों तथा संस्थाओं को आपस में सीधे संपर्क कर एक-दूसरे की शंकाओं और समस्याओं का गुप्त रूप से समाधान ही नहीं कर लेना चाहिए। अपितु एक-दूसरे का पक्ष समझ कर उनके प्रति अपना समर्थन भी प्रकट करना चाहिए। उन्होंने यदि एक दूसरे का पक्ष समझ लिया तो वे एक-दूसरे की बात का बुरा नहीं मानेंगे और इससे उनमें हीनताबोध भी नहीं होगा। ऐसा करने से सज्जनशक्ति का उत्साह बढ़ेगा और दुर्जनशक्ति नियंत्रित होगी। एक-दूसरे की कमियाँ, न्यूनता, कमजोरियाँ, कभी-कभार स्वभावगत दोषों को नजरंदाज कर सज्जन

डॉ. भवरलालजी जैन

व्यक्ति या संस्था जो काम जनहितार्थ, सिद्धहस्त, निपुणता, ईमानदारी और प्राथमिकता से एक-दूसरे का सहयोग करते हुए सामाजिक कार्यों को गति प्रदान करना चाहिए।

सारांश यह है कि सज्जनशक्ति के कार्यों का मूल्यांकन करते समय समझदारी तथा वास्तविकता का ध्यान रखकर व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। हम पहले ही संख्या में कम हैं इसका ध्यान रखकर, आगे बढ़ कर समविचारी और चरित्रवान लोगों को अपने साथ जोड़ने का प्रयास करना चाहिए। समय-समय पर अपने अहं को दूर करते रहना चाहिए। हर कार्य तथा समस्या समाधान के अवसर पर सबकी स्वीकृति प्राप्त करने का प्रयत्न तत्परता से करना चाहिए। ऐसे प्रयत्नों में सर्व सहमति का होना आवश्यक होता है। वे पक्षपाती ही बने, यह आवश्यक नहीं है। किंतु उनकी सहायता के लिए बरजोर शक्ति आएगी ऐसा भी मानकर न चलें। अपने मौलिक विचारों से वे समझौता कर रहे हैं, यह बहाना आवश्यक नहीं है। किंतु आनुषंगिक तथा प्रासंगिक विषयों के संदर्भ में उन्हें संवेदनशील और भावुक नहीं होना चाहिये। उदात्त ध्येय को ध्यान में रख कर छोटे-मोटे समझौतों को सहर्ष स्वीकार करने में कभी भी संकोच नहीं करना चाहिये।

अनुभवों से यह दिखाई देता है कि सज्जनशक्ति के ये घटक अपने-अपने स्थान पर या अपने विचारों के द्वीपों पर एक अधिष्ठान बन कर रहते हैं। सैद्धांतिक बहस से ऊपर उठ कर, कठोर निर्णय और कार्य करने का साहस वे नहीं कर पाते हैं। वे चिंतनशील तो होते हैं पर उदासीन भी होते हैं। ऐसे लोगों को अपनी उदासीनता दूर करके समाज को नई दिशा देने का काम आग्रह पूर्वक उत्साह से करना चाहिए । समान प्रवृत्ति के व्यक्ति, घटक, जोश के साथ और संस्थाओं को एकत्र कर उनकी अटूट श्रृंखला बनानी चाहिए। शत प्रतिशत नि:स्वार्थ व्यक्ति जनता और सरकार की राय को सरलता और सहजता से बहुत प्रभावित कर सकता है। ऐसे ईमानदार सज्जनों को चुनाव के झमेले में नहीं पड़ना चाहिए; वे कभी पड़ते भी नहीं हैं। किंतु वे समाज में मध्यस्थ की भूमिका अवश्य निभा सकते हैं। समाज की लगाम अपने नियंत्रण में रख कर सत्ता पक्ष और विरोध पक्ष, जो भी गलती कर रहे हों, उन्हें नीति और अपनी नैतिक शक्ति से नियंत्रित करना चाहिये। केवल माँगने पर ही उन्हें अपनी सलाह देनी चाहिए। लोग उनकी सलाह माने ही ऐसा आग्रह या अनुरोध कभी नहीं करना चाहिए। ऐसा प्रयास करने में उन्हें कई बार निराशा ही हाथ लगती है। सज्जन शक्तियों को अन्य घटकों से आवश्यक समर्थन प्राय: नहीं मिलता है। हो सकता है बरजोरशक्ति की अवहेलना और उपहास दोनों का उन्हें सामना करना पड़े। और यह भी संभव है कि सज्जनशक्ति के ही कुछ घटक भी ध्यान न दें या उनके प्रति अपनी उदासीनता प्रदर्शित करें तो भी सज्जन शक्ति को उनका विरोध नहीं करना चाहिए।

क्रमश:

फाउण्डेशन की गतिविधियाँ

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन बहुआयामी गतिविधियों के माध्यम से गाँधीजी के जीवन मूल्यों को व्यक्ति और समाज में स्थापित करने हेतु सदा प्रयत्नशील रहा है। संस्था का मूल उद्देश्य ही सत्य, अहिंसा, शांति, आपसी सहयोग की भावना का वैश्विक स्तर पर विकास करना है। फाउण्डेशन द्वारा ग्राम समुदाय के शाश्वत विकास की दिशा में आगे बढ़ने हेतु बहुविध कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, प्रस्तुत है एक रिपोर्ट **– संपादक**

गाँधी जयंती पर गाँधी उद्यान का लोकार्पण

विश्व अहिंसा यात्रा का आरंभ करते हुए श्रीमान तुषार गाँधी व विशेष जन

सच्चा लोकतंत्र केवल अहिंसा का ही परिणाम हो सकता है। एक विश्व संघ की संरचना अहिंसा के आधार पर ही हो सकती है। गाँधीजी के इन्हीं शाश्वत विचार के आधार पर विश्व को नई दिशा और दशा प्राप्त हो रही है। इन्हीं विचारों के बदौलत सारा विश्व उनकी जन्म जयंती को विश्व अहिंसा दिवस के रूप में मनाता है।

अहिंसा सद्भावना शांति यात्रा

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन जलगाँव नगर जनों एवं छात्रों के साथ मिलकर प्रति वर्ष गाँधी जयंती मनाता है। इस अवसर पर अहिंसा सद्भावना शांति यात्रा का आयोजन भी हर साल किया जाता है। इस साल जलगाँव नगरपालिका से गाँधी उद्यान तक आयोजित अहिंसा सद्भावना यात्रा की शुरुआत श्रीमान तुषार गाँधी ने हरी झंडी दिखाकर की थी। इस यात्रा में आश्रम भजनावली से प्रार्थना एवं भजन प्रस्तुत किये गए एवं छात्रों द्वारा गाँधीजी एवं लालबहादुर शास्त्री जी पर की गई घोषणाओं से वातावरण में चेतना का संचार हुआ। साथ-साथ चरखा जयंती की विषयवस्तु को दर्शाने के लिए बैलगाड़ी पर चरखे को प्रदर्शित किया गया था। इस यात्रा में विशेष उपस्थित महानुभावों के साथ जलगाँव शहर के विभिन्न विद्यालय व महाविद्यालय के छात्र गण तथा शिक्षक वृंद भी सम्मिलित थे। गाँधी उद्यान में पहुँचकर यह यात्रा सभा में तबदील हो गई। मुख्य कार्यक्रम की शुरुआत में अनुभूति स्कूल के छात्रों ने 'वैष्णव जन तो तेने रे कहिए' यह भजन प्रस्तुत किया। महात्मा गाँधी तथा लालबहादुर शास्त्री की प्रतिमा का पूजन करने के बाद तुषार गाँधी ने चरखा चलाकर विश्व अहिंसा दिवस समारोह का उद्घाटन किया।

अहिंसा शपथ लेते हुए मान्यवर व जन समूह

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित तुषार गाँधी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि, जीवन में यदि हम शांति चाहते हैं, अच्छा स्वास्थ्य चाहते हैं, तो हमारे आसपास का वातावरण स्वच्छ होना आवश्यक है। स्वच्छता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता ही गाँधीजी के प्रति सच्ची सद्भावना होगी। तुषार गाँधी ने अपने पिताजी से जुड़ी महत्त्वपूर्ण यादों को साझा करते हुए कहा कि मेरे पिताजी अरुण गाँधी को बचपन में बहुत गुस्सा आता था। तब बापू उन्हें समझाते थे 'अच्छे कार्य के लिए अपने गुस्से का इस्तेमाल करना सीखो।' गुस्सा बिजली की तरह होता है, जिस पर गिरता है, उसे जला देता है। इसलिए हमें हमेशा ऊर्जा का सकारात्मक उपयोग करना चाहिए। महात्मा गाँधी ने बताई हुई यह बातें आज के दौर में भी उपयोगी साबित हो रही है। इस अवसर पर तुषार गाँधी ने उपस्थित सभी लोगों को अहिंसा की शपथ दिलायी।

महात्मा गाँधी उद्यान के उद्घाटन कार्यक्रम में उपस्थित तुषार गाँधी, अशोक जैन, दलीचंद जैन व प्रमुख अतिथि गण

गाँधी जयंती कार्यक्रम में उपस्थित छात्र समूह व नगरजन

जलगाँव नगरपालिका द्वारा महात्मा गाँधी को अर्पित ऐतिहासिक मानपत्र, गाँधी उद्यान

महात्मा गाँधी उद्यान का लोकार्पण

नवीनीकरण किए गए गाँधी उद्यान का लोकार्पण महात्मा गाँधी के प्रपौत्र तुषार गाँधी एवं उपस्थित अतिथियों के कर कमलों द्वारा किया गया। पाठकों को ज्ञात हो की गाँधी उद्यान के नवीनीकरण का कार्य जैन इरिगेशन सिस्टिम्स लि., भवरलाल एवं कांताबाई जैन फाउण्डेशन तथा गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के माध्यम से किया गया है। गाँधी जयंती के इस अवसर पर गाँधी उद्यान का लोकार्पण कार्यक्रम भी आयोजित किया गया था। इसी उद्यान में महात्मा गाँधी के पुतले का अनावरण भी उपस्थित अतिथियों के द्वारा किया गया।

महाराष्ट्र राज्य जल संपदा मंत्री गिरीश महाजन ने स्वच्छता के मंत्र पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महात्मा गाँधी ने हमें स्वच्छता का मंत्र दिया उसके लिए प्राथमिक शर्त यह है कि स्वयं प्रेरणा से उसकी शुरुआत हो। जैन परिवार ने महात्मा गाँधी उद्यान का पुनः निर्माण कर शहर के प्रति अपना प्रेम जताया है।

जैन इरिगेशन सिस्टिम्स के अध्यक्ष एवं गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संचालक अशोक जैन ने प्रास्ताविक प्रस्तुत किया। आपने गाँधी उद्यान से जुड़ी अपनी बचपन की यादों को साझा किया। महात्मा गाँधी ने जिस आदर्श समाज का चित्र हमारे सामने खड़ा किया उनमें सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व यही है कि हम अपनी उत्तरदायित्वता के आधार पर समाज को बेहतर बनाएं। इसी सूत्र को पकड़कर आप कार्य कर रहे हैं, और इसी तत्त्व का सार्थक चित्र आपने महात्मा गाँधी उद्यान के रूप में नगर जनों को दिया है।

इस समारोह में महाराष्ट्र राज्य के जल संपदा मंत्री गिरीश महाजन, पूर्व मंत्री सुरेशदादा जैन, जैन उद्योग समूह के अध्यक्ष अशोक जैन, उपाध्यक्ष अनिल जैन, महापौर ललित कोल्हे, विधायक सुरेश भोले, फाउण्डेशन के सलाहकार मंडल के सदस्य एवं पूर्व कुलगुरु डॉ. के. बी. पाटील, जिलाधिकारी किशोर राजे निंबालकर, फाउण्डेशन के संचालक दलीचंद ओसवाल, डॉ. सुभाष चौधरी, शिरीष बर्वे, जैन इरिगेशन के व्यवस्थापकीय संचालक अजीत जैन, अतुल जैन, सौ. ज्योति जैन, अनुभूति निवासी स्कूल की संचालिका सौ. निशा जैन, स्मिता वाघ, सौ. सोनल गाँधी तथा शहर के विभिन्न विद्यालय के छात्र-छात्राएं, शिक्षक समूह एवं महानुभाव बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन सामूहिक राष्ट्रगान से किया गया। शंभु पाटील ने सूत्र-संचालन तथा फाउण्डेशन के कार्यकर्ता भुजंग बोबडे ने आभार प्रदर्शन किया।

महात्मा गाँधी उद्यान की विशेषताएं

नवीनीकरण किया गया गाँधी उद्यान में महात्मा गाँधी के जीवन दर्शन को दर्शाने वाली 'मोहन से महात्मा' चित्र प्रदर्शनी स्थायी रूप से लगाई गई है। इस प्रदर्शनी में गाँधीजी के जन्म की घटना से लेकर उनके द्वारा प्राप्त कि गई शिक्षा व उनके महत्त्वपूर्ण सत्याग्रह तक के घटनाक्रम ३५ पैनल के माध्यम से दर्शाए गए हैं। साथ-साथ फाउण्डेशन की गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी भी इस प्रदर्शनी में प्रस्तुत की गई है।

अत्याधुनिक सुविधाओं से सज्जित इस उद्यान में संपूर्ण राष्ट्रगान, संपूर्ण राष्ट्रगीत, गाँधीजी के विभिन्न संदेश, आश्रम भजन, जलगाँव नगरपालिका द्वारा गाँधीजी को अर्पित मानपत्र एवं राष्ट्रसंतों की रचनाएं दर्शायी गई हैं। यहाँ पर बच्चे खेल एवं वयस्क लोग शारीरिक व्यायाम के साथ प्रेरणादायी घटना व प्रदर्शनी का भी आनंद उठा सकते हैं। •••

गाँधीजी के जीवन दर्शन पर आधारित चित्र प्रदर्शनी 'मोहन से महात्मा' का आनंद लेते दर्शक, गाँधी उद्यान, जलगाँव

छात्रों में गाँधी साहित्य का वितरण

गाँधी साहित्य प्राप्त करते हुए छात्र समूह

२ अक्टूबर, गाँधी जयंती के अवसर पर गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन द्वारा जलगाँव जिला के धानोरा गाँव के ५ से १० कक्षा के छात्रों में गाँधी साहित्य का वितरण किया गया। छात्रों में मूल्यलक्षी शिक्षा के अभिगम को प्रस्तुत करने के लिए पुस्तकों का पठन होना आवश्यक है। इस सिलसिले से छात्रों में प्रारंभिक दौर से ही पठन की रुची निर्माण हो इस अभिगम को ध्यान में रखकर ३५ छात्रों को गाँधी साहित्य का नि:शुल्क वितरण किया गया। इस कार्यक्रम में फाउण्डेशन के नितीन चोपड़ा और राजेन्द्र जाधव उपस्थित थे। इस अवसर पर नितीन चोपड़ा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि बचपन से ही मूल्य आधारित संस्कार की नींव प्रस्थापित करने के लिए साहित्य का पठन होना महत्त्वपूर्ण है। गाँधी विचार के द्वारा हम बच्चों में सत्य, अहिंसा, स्वावलंबन जैसे शाश्वत मूल्यों का सिंचन कर सकते हैं। इस कार्यक्रम में धानोरा शाला समिति के दीपक पाटील, फौज़ी निंबा सोनवणे, शिक्षक वृंद तथा ग्राम जन उपस्थित थे। ❖❖❖

संगीत के द्वारा शांति की अनुभूति–प्रो. मार्क लिंडले

संगीत के सुरों को किसी का बंधन नहीं होता, वे सुर हृदय के अंतर्मन तक पहुँच जाते हैं। जब जब अपने अंतर्मन को झांकने की बात होती है संगीत सबसे अच्छा जरिया बन जाता है। ऐसी ही कुछ बात जलगाँव स्थित भाऊ के उद्यान में दि. १४ अक्टूबर २०१७ गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन द्वारा आयोजित 'म्यूजिक फॉर पीस' कार्यक्रम में हुई। अमेरिका के प्रो. मार्क लिंडले ने अपनी अनोखी शैली में सिंथेसायजर पर इतने बेहतरीन सुर छेड़े कि सुनने वाले मंत्र मुग्ध हो गए। हमारे पाठक वर्ग जानते ही होंगे की अमेरिका से आए प्रो. मार्क लिंडले अपना महत्त्वपूर्ण समय गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन में बिताते हैं। प्रो. मार्क अर्थशास्त्र के विद्वान हैं साथ-साथ संगीत विद्वान के रूप में भी जाने जाते हैं। प्रो. लिंडले गाँधी विचार को जपने वाले और जीने वालों में से हैं, वैसे ही संगीत के भी वे पुजारी हैं। उन्होंने जर्मनी के प्रसिद्ध संगीत विद्वान जॉन सेबेस्टीयन बाख कि की-बोर्ड की रचना का स्वतंत्र रूप से अभ्यास किया है। भाऊ के उद्यान में प्रो. मार्क लिंडले ने करुणा, शांति और आनंद की ऐसी तरंगें छेड़ी की श्रोता वर्ग मोहित हो गए। इस महफिल में उन्होंने बाख की दस रचनाओं को सादर प्रस्तुत किया। यीशु को शूली पर चढाए जा रहे थे उस वक्त हृदय को पिघला देने वाली करुण वेदना को उन्होंने सिंथेसायजर पर प्रस्तुत कर रसिकों को करुण रस का अहसास करवाया। प्रो. मार्क द्वारा प्रस्तुत संगीत ने शांति की अनुभूति करवाई, यूं कहें उनके द्वारा दिया गया शीर्षक 'म्यूजिक फॉर पीस' सही मायने में सार्थक हुआ।

म्यूझिक फॉर पीस कार्यक्रम में सिंथेसायझर बजाते हुए डॉ. लिंडले

उक्त कार्यक्रम में प्रस्तावना एवं प्रो. मार्क लिंडले का परिचय फाउण्डेशन के विनोद रापतवार ने प्रस्तुत किया। गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संचालक मंडल के सदस्य दलीचंद जैन ने गाँधी विचार एवं डॉ. भवरलालजी जैन के द्वारा किया गये प्रयास के बारे में अपनी बात रखी। इस कार्यक्रम में फाउण्डेशन के डीन डॉ. जॉन चेल्लदूरै, आशुतोष कुमठेकर, अशोक चौधरी, समाज कार्य स्नातकोत्तर अभ्यासक्रम के छात्र एवं जलगाँव शहर के संगीत रसिक बड़ी मात्रा में उपस्थित थे। ❖❖❖

गाँधी और आरोग्य विषय पर डॉ. लिंडले का व्याख्यान

गाँधी और आरोग्य विषय पर अपनी प्रस्तुति करते हुए डॉ. लिंडले

डॉ. मार्क लिंडले, एक प्रसिद्ध पारिस्थितिक अर्थशास्त्री है, वे गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन में मुलाकाती शोधकर्ता के रूप में आते है। डॉ. लिंडले ने गाँधी और आरोग्य विषयक महत्वपूर्ण तथ्यों पर अध्ययन किया है। दि. २४ अक्तूबर २०१७ को फाउण्डेशन के प्रांगण में डॉ. लिंडले का गाँधी और आरोग्य विषयक व्याख्यान आयोजित किया गया था। अपने व्याख्यान के दौरान डॉ. मार्क लिंडले ने गाँधीजी के चिकित्सा शास्त्र के प्रति लगाव व उनसे संबंधित महत्वपूर्ण घटना को अपने शोध कार्य में समावेश किया। उनके द्वारा दर्शाए गए महत्वपूर्ण पहलू यहाँ प्रस्तुत कर रहे है।

१) मोहनदास बचपन में चिकित्सा व्यवसायी होने की लालसा रखते थे। और यह बात उन्होंने अपने बड़े भाई के सामने प्रस्तुत की थी।

२) पश्चिम के अनुसंधान में प्रेक्टिस करनेवाले डॉ. के साथ गाँधीजी का संबंध।

३) स्वस्थ शारीरिक व्यायाम के बारे में उनके उपदेश व व्यवहार में लाने योग्य नुसखे।

४) गाँधीजी की शाकाहार संबंधित विचार व व्यावहार की उत्पत्ति में महात्मा गाँधी के द्वारा आरोग्य के संदर्भ में रखा गया दृष्टिकोण।

५) अपने कार्य के दौरान कई घटनाओं में उन्होंने अपने सिद्धांत और ज्ञान के द्वारा प्राथमिक चिकित्सक के रूप में टीम तैयार कर अपनी सेवा प्रदान की। और जो सैन्य प्राथमिक चिकित्सा कार्यकर्ताओं को होना चाहिए उतना प्राथमिक उपचार का ज्ञान उनके पास पर्याप्त मात्रा में था।

६) लुई क्यूनेन और एडॉल्फ जुस्ट के प्राकृतिक उपचार के प्रति उनका लगाव और उनके प्राकृतिक उपचार में पानी व मिट्टी आधारित किए गए उपचार।

७) महात्मा गाँधी के उपवास के संबंध में डॉ. मार्क ने इस मुद्दे को भी प्रस्तुत किया कि गाँधीजी के उपवास के केंद्र में स्वास्थ्य-चिकित्सा का नजरिया मुख्य रूप से था।

उनके द्वारा उल्लेखनिय सफल उपचार के कुछ उदाहरण को भी डॉ. मार्क लिंडले ने परिभाषित किया।

उक्त व्याख्यान में फाउण्डेशन के संचालक डॉ. सुदर्शन आयंगार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। ***

शैक्षिक दौरा संपन्न

फाउण्डेशन द्वारा कार्यरत समाज कार्य स्नातकोत्तर डिप्लोमा अभ्यासक्रम के चौथी बैच के लिए छात्रों का चयन किया गया। अभ्यास के अंतर्गत प्रति वर्ष भारत के विभिन्न भागों में कार्यरत महत्त्वपूर्ण सामाजिक संगठन एवं संस्थाओं का शैक्षिक दौरा आयोजित किया जाता है। वर्ष २०१७ का दूसरा शैक्षिक दौरा तमिलनाडु में आयोजित किया गया था। चेन्नई के पास कुटुम्बकम गाँव को आदर्श गाँव एवं गाँधीजी द्वारा कल्पित ग्राम स्वराज्य की संकल्पना को साकार करने का कार्य वहाँ के ग्राम पंचायत के अध्यक्ष श्रीमान इलांगो द्वारा किया जा रहा है। कुटुम्बकम गाँव पिछले १५ साल से ग्राम स्वराज के रास्ते पर चल रहा है। इससे पहले इस गाँव में हर वो समस्या थी जो देश के किसी भी अन्य गाँव में देखी जा सकती है। शराब का दूषण, झगड़े, छुआछूत, गंदगी आदि। लेकिन आज इस गाँव की स्थिति अलग है, कुटुम्बकम में आज जातियों की दिवारें नष्ट हो चुकी है। कल तक नीची और ऊँची जाति के झगड़े में उलझे थे वही परिवार अब पड़ोस में रह रहे हैं। यहाँ तक कि गाँव में आंतर-जातीय विवाह भी हुए है। सामाजिक समस्याओं की श्रृंखला आज थम चुकी है। इसका श्रेय वहाँ के सरपंच इलांगो रंगास्वामी को दिया जाता है। इलांगो एक सफल वैज्ञानिक है लेकिन १९९६ में अच्छी खासी नोकरी छोड़कर अपने गाँव में पंचायत का चुनाव लड़े और जीत भी गए। पंचायत के कामकाज में पूरी पारदर्शिता और हर काम के बारे में खुली बैठकों में चर्चा से लोग पंचायत के कामकाज में दिलचस्पी लेने लगे। नतीजा यह हुआ कि देखते ही देखते गाँव आदर्श स्थिति पर पहुँचने लगा। आज देश के जानेमाने आदर्श गाँवों की श्रृंखला में कुटुम्बकम की भी अपनी पहचान है।

इस अभ्यास दौरे के दौरान इलांगो के साथ हमारे छात्रों ने संवाद किया। अपने अनुभव साझा करते हुए इलांगो ने अपने राजनीतिक कष्टों की कहानी में आए अनुभव व्यक्त किए। गाँधी विचार के प्रखर प्रयोगशील इलांगो ने अपने गाँव को ग्राम स्वराज की संकल्पना के आधार पर खरा उतारने की दिशा में कदम बढाया है। गाँव में स्थानीय सामग्री द्वारा शौचालय, साबुन, दाल प्रक्रिया उद्योग, सेनेटरी नेपकीन उत्पादन, एलइडी बल्ब व रिमोट वाले सोलर पंखों जैसे करीब १० से १२ प्रकार के ग्रामोद्योग कार्यरत किए हैं। विकेंद्रित व्यवस्था का उत्कृष्ट उदाहरण मतलब कुटुम्बकम गाँव। हमारे छात्रों के लिए यह मुलाकात गाँधीजी की ग्राम स्वराज्य पर आधारित गाँव की संकल्पना को समझने के लिए कारगर सिद्ध हुई।

श्रीमान इलांगो द्वारा किए गए प्रयोग का प्रत्यक्षीकरण के दौरान

अभ्यास यात्रा का दूसरा पड़ाव पोंडीचेरी के नजदीक स्थित साधना फॉरेस्ट में रहा। साधना फॉरेस्ट ने पारिस्थितिक पुनरुत्थान और स्थायी जीवनशैली की शुरुआत दिसम्बर २००३ से की हैं। इसके संस्थापक योरीट और अविराम रोजिन ने ऑरोविला के बाहरी इलाके में करीब ७० एकड़ नष्ट हो रही शुष्क जमीन को फिर से पुनरुज्जीवित किया है। मानव एकता की भावना का विकास, स्थायी जीवनशैली, पारिस्थितिक परिवर्तन, बंजर जमीन का पुनरुद्धार और शाकाहार जीवनशैली को बढ़ावा देना साधना फॉरेस्ट का मूल उद्देश्य है। अविराम रोजिन की कार्य-प्रणाली स्थानिक ऊर्जा और संसाधन का जीवंत व योग्य प्रयोग, स्वदेशी उष्णकटिबंधी सूखे सदाबहार वन के निर्माण पर केंद्रित है। हमारी टीम साधना फॉरेस्ट में करीब दो दिन ठहरी थी। ये दो दिन हमारे लिए महत्त्वपूर्ण नजरिया प्राप्त करने के साधन बने। साधना फॉरेस्ट की जीवन पद्धति पर्यावरण पूरक है, इसलिए वहाँ पर रहने वाले सभी लोग पर्यावरण पूरक तत्त्वों से बनी झोपडीयों में रहते हैं। वहाँ की दिनचर्या में श्रम को प्राधान्य दिया गया है, सुबह सामूहिक श्रम पर आधारित गतिविधियां रहती हैं। अविराम रोजिन एवं उनकी टीम का वृक्ष के प्रति देखने का नजरिया बेहद संवेदनशील है, वे लोग पौधे लगाने की कला में एक आनंद की अनुभूति करवाते हैं। यह दो दिनों तक हमारी टीम के सदस्य भी जंगल के बीच स्थित झोपड़ीयों में रहे। पर्यावरण के प्रति संवेदना, समूह भावना एवं श्रम आधारित जीवनशैली को हमने नजदीक से महसूस किया। इतना तो निश्चित रूप से कह सकते हैं कि साधना फॉरेस्ट एक उत्कृष्ट जीवन पद्धति का निर्माण कर रहा है। मिश्र संस्कृति के द्वारा निर्मित विश्व का दर्शन हमनें यहीं पर किया।

अगर अविराम और उनकी टीम कि निष्ठा के बारे में कहना हो तो बस यही कह सकते हैं कि जंगल को बढ़ाने के लिए आपने जंगल में डेरा डाला है।

साधना फॉरेस्ट में अविराम रोजिन के साथ वृक्षारोपण करते हुए फाउण्डेशन के कार्यकर्ता

इस यात्रा का तीसरा एवं अंतिम पड़ाव मदूरै स्थित टाटा धान फाउण्डेशन में रहा। यहाँ पर हमने करीब तीन दिन बिताए। टाटा धान फाउण्डेशन एक प्रमुख विकासात्मक कार्य करने वाली संस्था है, जो गरीबों के उत्थान के लिए काम कर रही है। धान फाउण्डेशन विकास आधारित नेतृत्व में अत्यधिक प्रेरित और शिक्षित युवा महिलाओं और पुरुषों को लाने के उद्देश्य से कार्य कर रहा है।

धान फाउण्डेशन द्वारा लोगों को आत्मनिर्भर एवं समुदायों को सक्षम बनाने के लिए लोक संस्था आधारित निर्माण कार्य किया जा रहा है। हमारी टीम मदूरै के पास ग्रामीण भाग में बसे धान पिपल्स अकादमी परिसर में ठहरी थी। पिपल्स अकादमी के निदेशक जानकीरमन ने धान फाउण्डेशन के आरम्भ से इति तक के सफर की प्रस्तुति की। फाउण्डेशन के कार्य का जायजा लेने के लिए मदूरै के इर्दगिर्द बसे गाँवों में मुलाकात की गई। फाउण्डेशन द्वारा ग्रामीण भागों में बसी महिलाओं को सम्मिलित कर कलजियम नाम से लोक संस्था का निर्माण किया गया है। इस लोक संस्था में ३१२ बचत गुट से करीब ४ हजार से भी अधिक महिलाएं सम्मिलित हैं। कलजियम के अध्यक्ष चिन्नपिलै अम्मा हैं, जिनका सत्कार स्त्री शक्ति पुरस्कार से पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपाई ने १९९९ में किया था। चिन्नपिलै अम्मा ने न केवल महिलाओं को एकत्रित किया बल्कि बेहतरीन संगठन बनाकर महिलाओं को सशक्त बनाया। इस कलजियम संगठन के द्वारा एक अत्यधिक सुविधायुक्त अस्पताल भी चलाया जा रहा हैं।

टाटा धान फाउण्डेशन के इस प्रयास के माध्यम से महिलाएं न केवल निर्णय प्रक्रिया में सम्मिलित होने लगी है बल्कि आर्थिक आजादी की ओर कदम भी बढ़ाने लगी है। इस लोक संस्था द्वारा कई तरह कि सेवाएं प्रदान कि जाती हैं, जैसे महिला आरोग्य बीमा योजना, शौचालय आर्थिक निधि, अस्पताल में निम्न शुल्क पर उपचार आदि। इस यात्रा के दौरान वलयगम लोक संस्था एवं रैनफेड वॉटर टैंक प्रकल्प की मुलाकात भी की गई थी। बारिश कम होने पर भी कृषि के लिए आवश्यक पानी मुहैया कराने के उद्देश्य से तमिलनाडु के रामनाथपूरम जिला में वॉटर टैंक प्रकल्प की शुरूआत की गई है। न्यूनतम बारिश होने के बावजूद भी वहाँ के किसान अपनी खेती को हरा-भरा रख पाते हैं।

अंत में हमारी मुलाकात टाटा धान के निदेशक श्रीमान् वासीमलाई से हुई। टाटा धान फाउण्डेशन के उद्देश्य पर अपने विचार स्पष्ट करते हुए वासीमलाई ने कहा कि यह एक मूवमेन्ट है जो देश के सभी गाँवों तक पहुँचनी चाहिए। महिलाओं में आर्थिक स्थिरता प्राप्त होगी तब कई तरह की समस्याएं अपने आप समाधान की ओर अग्रसर होंगी।

हमारे छात्रों को नया मंत्र देते हुए वासीमलाई ने कहा कि कृति आधारित हमें अपनी एक अलग पहचान खड़ी करनी चाहिए। वासीमलाई

शैक्षिक दौरा के दरम्यान महिला समूह के साथ संवाद करते हुए फाउण्डेशन के कार्यकर्ता

के द्वारा किए गए संक्षिप्त संवाद ने हमारे छात्रों में नई प्रेरणा की मिसाल जगाई।

इस दस दिवसीय अभ्यास यात्रा के माध्यम से छात्र नए अनुभव आधारित शिक्षा, पर्यावरण के प्रति देखने का नजरिया, गाँधी विचार आधारित कार्य पद्धति एवं लोक संस्था के निर्माण के विभिन्न पहलू को समझ सके। ***

फाउण्डेशन द्वारा ई-साक्षरता अभियान संपन्न

संगणक शिक्षा के दौरान प्रायौगिक में व्यस्त छात्र समूह

गाँधी विचार प्रेरित वैश्विक गाँव की परिभाषा सार्थक करने के लिए गाँव को विश्व के साथ जोडना जरूरी बन जाता है। इस भूमिका में गाँव के छात्रों को कंप्यूटर की जानकारी स्वाभाविक रूप से प्राप्त होनी चाहिए। दि. १५ से ३० नवम्बर २०१७ के दौरान फाउण्डेशन द्वारा ई-साक्षरता अभियान कार्यांवित किया गया, इस अभियान के अंतर्गत वावडदा, जलके, म्हसावद, डोमगांव, शिरसोली आदि गाँवों में स्थित विद्यालयों के छात्रों को कंप्यूटर आधारित जानकारी प्रदान की गई है। इस अभियान के लिए नागपूर से कंप्यूटर इंजिनिअरींग के छात्र ऋषिकेश देशमुख और चेतन हिंगणेकर ने अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया। ई-मेल, नेटसर्फिंग, ई-पेमेंट आदि विषयों को स्पर्श करते हुए छात्रों के साथ अभ्यासपूर्ण जानकारी साझा की गई। ई-साक्षरता अभियान न केवल छात्रों तक सिमित रहा बल्कि शिक्षक तथा ग्रामवासी भी उसमें सम्मिलित होते दिखाई दिए। इस अभियान के अंतर्गत भविष्य में होनेवाले बदलाव और तकनीक की उपयोगिता को भी बखुबी सादर किया गया। पंद्रह दिन तक चले इस अभियान को फाउण्डेशन के डीन डॉ. जॉन चेल्लादुरै, समन्वयक उदय महाजन, विनोद रापतवार, नितीन चोपडा तथा आशुतोष कुमठेकर ने निर्देशित किया। ***

सामाजिक उत्तरदायित्व आधारित कृति बड़े भाऊ को समर्पित

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन परिवार की नींव को मजबूत रूप से स्थापित करने वाले फाउण्डेशन के संस्थापक परम श्रद्धेय भवरलालजी जैन (बड़े भाऊ) ने नेक कार्य के लिए मानव श्रृंखला का निर्माण किया है। उनका जन्म १२ दिसम्बर १९३७ को वाकोद गाँव में हुआ था। फाउण्डेशन परिवार प्रति वर्ष उनके जन्म दिन पर रचनात्मक कार्य कर जन्मदिन की शुभकामना देते है।

गाँधीजी के विचाराधारित गाँव खड़ा करने में श्रद्धेय बड़े भाऊ ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। बड़े भाऊ के जन्मदिन पर गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन परिवार अपना स्वैच्छिक योगदान प्रदान कर गाँव में श्रम आधारित कार्य में अपनी निष्ठा अर्पित करता है। आज दि. १२ दिसम्बर २०१७ के दिन

सामुदायिक श्रम कार्य में अपना योगदान देती धानोरे गाँव की महिलाएं

बड़े भाऊ का ८१ वाँ जन्मदिन था इस दिन फाउण्डेशन के कार्यकर्ता द्वारा दापोरा एवं खर्ची गाँव में जा कर ग्राम सफाई एवं सामाजिक जागरूकता का कार्य किया गया। इस कार्य में धानोरा एवं खर्ची दोनों गाँव के ग्रामजन

खर्ची गाँव में सफाई अभियान के दौरान फाउण्डेशन के कार्यकर्ता एवं ग्रामस्थ

की सहभागिता प्रमुख रूप से प्राप्त हुई, आज के दिन सामुहिक श्रमदान के माध्यम से गाँव के प्रमुख मार्ग एवं सामुदायिक शौचालय की सफाई को अंजाम दिया गया। फाउण्डेशन परिवार यह निश्चित रूप से मानता है कि बड़े भाऊ ने अपने जीवन में श्रम की प्रतिष्ठा महसूस की है वही चेतना के आधार पर हम उनके दिखाए पथ पर गाँधी विचार आधारित कार्य करते रहेंगे। ***

ग्रामीण समुदाय के लिए भवरलालजी जैन शुद्ध पेय जल योजना

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन द्वारा ग्रामीण भाग में शुद्ध पीने का पानी लोगों को मुहैया कराने के संदर्भ में जैन इरिगेशन सिस्टिम्स एवं भवरलाल एवं कांताबाई फाउण्डेशन के सहयोग से डॉ. भवरलालजी जैन शुद्ध पेय जल योजना कार्यांवित की गई है। इस परियोजना का उद्घाटन भवरलालजी की ८१ वीं जन्म जयंती दि. १२ दिसम्बर २०१७ के दिन सेवादास दलीचंद जैन एवं जैन इरिगेशन के अध्यक्ष एवं गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संचालक अशोक जैन के कर कमलों द्वारा जलगाँव जिला के कुरंगी गाँव में किया गया। कार्यक्रम में अशोक जैन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पद्मश्री डॉ. भवरलालजी जैन ने पानी के लिए अपना जीवन समर्पित किया है। डॉ. भवरलालजी जैन का स्वप्न था कि गाँव में बसे जनसमूह को किफायती शुल्क में पीने का शुद्ध पानी उपलब्ध होना चाहिए। उनके ८१ वीं जयंती पर इस योजना का लोकार्पण करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है।

कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए फाउण्डेशन के संचालक श्रीमान अशोक जैन

जैन इरिगेशन के अन्वेषण के द्वारा विकसित किया हुआ यह शुद्ध पेय जल यंत्र वैश्विक स्तर पर पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। विकास कार्य पर प्रकाश डालते हुए अशोक जैन ने कहा कि लोक सहभागिता के आधार पर

कुरंगी गाँव में स्थापित जल मंदीर का उदघाटन करते हुए गणमान्य

विकास को प्राधान्य देते हुए राजकारण से मुक्त कार्य के लिए फाउण्डेशन हमेशा तत्पर रहेगा।

कुरंगी ग्रामजनों की ओर से इस कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य मेहमानों का ढोल-नगारों से भव्य स्वागत किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित मेहमानों के द्वारा शुद्ध पेय जल योजना में समाविष्ट लोगों को स्मार्ट कार्ड प्रदान किए गए। इस योजना को स्थायी रूप प्रदान करने के लिए लोक सहभागीदारी के आधार पर कार्यांवित किया गया है। इस यंत्र के द्वारा प्रति व्यक्ति हर रोज ४ लिटर शुद्ध पानी दिया जायेगा एवं उनकी देखभाल व रखरखाव की जिम्मेदारी ग्राम पंचायत के माध्यम से जैन इरिगेशन निभायेगा। आने वाले दिनों में पद्मश्री भवरलालजी जैन के द्वारा निश्चित किए गए ३० गाँवों में भी इस योजना को कार्यांवित किया जाएगा।

इस कार्यक्रम में कुरंगी गाँव के सरपंच गजानन पवार, उप सरपंच शेख अमीन शेख हुसैन, अतुल जैन, अथांग जैन, फाउण्डेशन के समन्वयक उदय महाजन, विनोद रापतवार एवं अन्य सहकारी बंधु उपस्थित थे। कार्यक्रम की प्रस्तावना विनोद रापतवार ने एवं आभार प्रदर्शन कुरंगी गाँव के सरपंच ने प्रस्तुत किया। समूह राष्ट्रगान से कार्यक्रम का समापन हुआ।

ग्राम स्वराज पर कीर्तन

ग्राम स्वराज की संकल्पना निर्माण करने की पूर्व शर्त है कि गाँव के लोगों को सक्षम बनाया जाए। इसके अंतर्गत लोक जागरुकता लाने के लिए विभिन्न तरह के कार्यक्रम फाउण्डेशन द्वारा किए जाते हैं। कुरंगी गाँव

में पद्मश्री भवरलालजी जैन शुद्ध पेय जल योजना का उद्घाटन हुआ उसी दिन सायं काल में एक जन-जागृति कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। तुकड़ोजी महाराज की ग्राम गीता प्रस्तुत करने के लिए गुलाबराव महाराज व उनकी टीम उपस्थित थी। गुलाबराव महाराज ने कुरंगी ग्राम जनों को गाँव का महत्त्व व गाँव के शाश्वत विकास के लिए क्षेत्रीय लोगों की क्या भूमिका होनी चाहिए, इस विषय पर अपनी अनोखी शैली में कीर्तन को प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में फाउण्डेशन के विनोद रापतवार, फाउण्डेशन द्वारा कार्यरत समाज कार्य स्नातकोत्तर अभ्यासक्रम के छात्र तथा कुरंगी ग्राम जन उपस्थित थे। ***

कार्यकर्ता निर्माण करने की दिशा में एक कदम

तपोभूमी ट्रस्ट, ओडिसा और निवेदिता निलयम्, साटोडा, जि. वर्धा के संयुक्त माध्यम से युवा जीवन दृष्टी सम्मेलन दि. २६, २७ और २८ दिसंबर २०१७ के दौरान आयोजित किया गया था। आज की युवा पीढ़ी का दैनंदिन समाज जीवन के प्रति नजरीया कैसा है? और कैसा होना चाहिए? शिक्षण, आरोग्य और स्वच्छता इस विषय को सकारात्मक दृष्टि से काम करने की सहजता होनी चाहिए इसी उद्देश्य से यह युवा जीवनदृष्टी सम्मेलन आयोजित किया गया था।

इस सम्मेलन में गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन की ओर से प्रशांत सूर्यवंशी और मयुर गिरासे सहभागी हुए थे। वर्तमान समय में ग्राम विकास पर अभिनव, नाविन्यपूर्ण शाश्वत उपाय, आदर्श गाँव के अलग-अलग पहलुओं पर चर्चा-सत्र आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन में कुल आठ राज्यों से १५० युवक सम्मिलित हुए थे। इस सम्मेलन में सहभागि होने से फाउण्डेशन के कार्यकर्ता में सामुदायिक संवेदना एवं सामाजिक क्रिया को क्रियांवित करने का नया दृष्टिकोण प्राप्त हुआ। ***

चरखे की जरूरत को समझने की आवश्यकता है – सोनम वांगचुक

३१ दिसम्बर २०१७ को गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के प्रांगण में श्रीमान सोनम वांगचूक का व्याख्यान आयोजित किया गया था। सुबह सामूहिक प्रार्थना में आयोजित इस व्याख्यान में श्रीमान वागंचुक ने कहा कि अगर हम वर्तमान समय में बुद्ध, महावीर या गाँधीजी के विचारों को पूनर्परिभाषित नहीं करेंगे तो मुझे लगता है कि यह संकट की स्थिति होगी। पुराने विचार का संदर्भ आज भी मौजूद है उनको हम आज के समय में समझने की आवश्यकता है। अहिंसा को आज के संदर्भ में कैसे देखा जाए। आज हम इंसान को किस तरह देखें जैसे बुद्ध ने देखा गाँधीजी ने देखा। आज के संदर्भ में हम उन विचारों पर गौर करेंगे तो पता चलेगा की हम कितने हिंसक बने हुए है।

वर्तमान में हिंसा का स्वरूप बदल गया है। अगर हम इंटरनेट पर मृत्यु के कारण देखें तो हत्या या खून २६ वें नंबर पर है। इससे पहले २५ कारणों में हमारी जीवनशैली आती है, हम जब अपने स्वरूप को देखेंगे तो गभराहट होगी की आज हम कितने हिंसात्मक हो गए है। पृथ्वी पर अपना अस्तित्व रखनेवाली वन्य प्राणी की ५२ प्रतिशत जाती लुप्त हो चुकी है और यह केवल पिछले ४० साल में हुआ है। जिसको बनाने में प्रकृति को करोड़ो साल लगे उसे लुप्त करने में हमने ४० साल ही लगाऐ। अगर ऐसी स्थिति रही तो आने वाले कुछ समय में वन्य जीवन नष्ट हो जाएगा। आज की हिंसा युद्ध से नहीं झगडे से नहीं बल्कि यूं कहे की हम जो इस्तेमाल कर रहे है उनसे होती है। भौतिकवाद की इस दौड में हमें संतुष्टि ही नहीं हो रही है, हम अपने आपके स्वरूप को विशाल ही बनाते जाते है।

इसलिए हमें गाँधीजी और बुद्ध की अहिंसा के तत्व को आज के संदर्भ में उतारने की आवश्यकता है। हम अपने आप को शांति प्रिय मानते हैं तो फिर से सोचने की बात है। हमारे पास वैकल्पिक तकनीक है उनको बढ़ावा देना है। हम ईंधन के माध्यम से प्रदुषण फैला कर तापमान को बढाते है, बल्कि इसे प्रयोग में लाने की जगह हमें सौर ऊर्जा का प्रयोग करना चाहिए।

मैं मानता हूँ कि हमारी जरूरत है उस हिसाब से हमें संसाधन का प्रयोग करना चाहिए। एक समय आयेगा जब हम चरखे की जरूरत और उनके महत्व को समझेंगे तब हम अपने आपको प्रस्थापित करेंगे। हमारे धर्म में जो स्थान अहिंसा का है वह स्थान हमारी जीवनशैली में आना चाहिए।

उक्त व्याख्यान में फाउण्डेशन के कार्यकर्ता उपस्थित थे। श्रीमान वांगचुक का परिचय एवं समापन अश्विन झाला ने किया। ***

श्रीमान सोनम वांगचुक के साथ गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन परिवार

दूध उत्पादक मंडल की वार्षिक सभा

कुर्हाडदा, दापोरा एवं धानोरा गाँवों में स्थापित दूध उत्पादक मंडल अपनी क्षमता के आधार पर अच्छी प्रगती कर रहे है। एक साल के आर्थिक व्यवहार के आधार पर किए गए लेखा जोखा में इन दूध उत्पादक मंडलों ने क्रमशः ५० लाख, २८ लाख और १३ लाख रु. का वार्षिक आर्थिक व्यवहार किया है। इन मंडलों की पहली वार्षिक सभा में यह निर्णय लिया गया कि होने वाले आर्थिक मुनाफे के साथ बोनस वितरण की व्यवस्था को सुघड व सुयोग्य बनाई जाए, ताकि मंडल के सदस्यों को सुखी जीवनशैली का अनुभव प्राप्त हो सके। इस आधार पर मंडल ने निर्णय लिया कि बोनस की रकम में से सदस्यों के लिए घर में इस्तेमाल कर सके ऐसी सामग्री भेंट की जाय। वार्षिक सभा में फाउण्डेशन के डीन डॉ. जॉन चेल्लदूरै, नितीन चोपडा तथा सागर चौधरी सभा में उपस्थित रहकर सदस्यों को प्रेरित किया। फाउण्डेशन सहकारिता की

दापोरा दूध मंडल की वार्षिक सभा में सदस्यों को सामग्री वितरण करते डॉ. जॉन चेल्लदूरै

भावना को प्रबल रूप से प्रस्थापित कर आसपास के गाँव को आर्थिक स्थिरता प्रदान करने का प्रयास अविरत करता रहेगा। ♦♦♦

दापोरा गाँव – स्वच्छ गाँव की ओर एक कदम

दापोरा गाँव में निर्मित मैजिक पिट (शोष गड्ढा)

घरगथ्थु इस्तेमाल किए गए पानी का निकाल योग्य रूप में नहीं किया तो एकत्र हो कर कीचड़ बन जाता है जो मच्छरों को खुला निमंत्रण देता है, जिस कारण बीमारियाँ फैलती है। फाउण्डेशन द्वारा लोगों के आरोग्य को ध्यान में रखकर सहभागीता के आधार पर स्वच्छ गाँव का प्रयास किया जा रहा है, जिसमें स्वच्छ गाँव की परिभाषा को सार्थक करने के लिए शौचालय व शोष गड्ढा बनाने की पद्धति पर जोर दिया जाता है। फाउण्डेशन के द्वारा सामुदायिक जागरूकता निर्माण कर विभिन्न तरह के प्रत्यक्षीकरण भी किया जाता है। दापोरा गाँव में फाउण्डेशन के कार्यकर्ता सागर चौधरी के मार्गदर्शन में लोक सहभागिता से शोष गड्ढा तैयार किया गया। शोष गड्ढा तैयार करने की पद्धति कुछ इस प्रकार रही। पांच फिट छौडा, गहरा और लंबा एक गड्ढा बनाया इसमें निम्न स्तर पर ईंटों के बड़े टुकड़े, दूसरे स्तर पर ईंटों के छोटे टुकड़े और उपरि स्तर में एक प्लास्टिक का डिब्बा रखा गया। उसमें नारियल की जटाए तथा सुतली जूट भर दिया गया, यह पानी के साथ आने वाला ठोस गंद उपर ही रखेगा, ऐसा करने से सफाई के लिए सुविधा भी बनी रहेगी। इसके दो फायदे होंगे १. जमीन के उपर गंदा पानी नहीं जमेगा और २. पानी साफ हो कर जमीन में रिसाव होने की वजह से जमीन के अंदर का पानी भी प्रदूषित नहीं होगा।

इस तकनीकी शिक्षा को ग्राम जनों के साथ साझा किया गया, ऐसा करने से लोगों ने शोष गड्ढे के महत्व को समझा और उनको बनाने के लिए स्थानिक संसाधनों को काम में लगाया। ♦♦♦

गाँधी तीर्थ अब आईएमएस (इंटीग्रेटेड मैनेजमेंट सिस्टम) से सुसज्जित

गाँधी तीर्थ संग्रहालय अपनी इमारत के निर्माण में बरती गई पर्यावरणीय संवेदना के लिए जाना जाता है। यहाँ पर गाँधी जीवन दर्शन को नए अंदाज में हूबहू दर्शाया गया है, अब तक अनेक पुरस्कार एवं उपलब्धियों से सम्मानित किया जा चुका है। गाँधी तीर्थ अब ISO के IMS (Integrated Management System) एकीकृत प्रबंधन प्रणाली की श्रृंखला में समाविष्ट हो चुका है। उनके अंतर्गत (ISO 9001: 2015, ISO 18001: 2015, OHSS: 2007) EMS (Environmental Management System) पर्यावरण प्रबंधन प्रणाली, QMS (Quality Management System) गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली और OHSS (Occupational Health and Safety asessment Series) व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा आकलन श्रृंखला के लिए सफलता से प्रमाणीकरण किया गया है। इस प्रमाणीकरण के साथ गाँधी तीर्थ की गतिविधियां अब ISO: 9001: 2015 प्रमाणित गतिविधियों में सम्मिलित हो चुकी हैं। इसके अंतर्गत लागू होने वाले पूरे क्षेत्र का प्रमाणन 2020 तक अनुशंसित कर स्वीकृत किया गया है। इस कठिन लक्ष्य को पूरा करने के लिए फाउण्डेशन के कार्यकर्ताओं को विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। सबसे अच्छी बात तो यह है, कि पहले ही प्रयास में यह सिद्धि हासिल की गई है। ♦♦♦

पाठकों के अभिमत

'खोज गाँधीजी की' पत्रिका पर हमें पाठकों के अभिमत हमेशा प्राप्त होते रहते हैं। प्रस्तुत है पिछले अंक के लिए प्राप्त कुछ पाठकों के अभिमत – ***संपादक***

Great! Happy and surprised to see that you are trying to revive Gandhi. In education, agriculture, sustainable life style, rural development and healthy environment; we will have to follow Gandhi. I am tempted to visit the Teerth. Thanks a million!

Dr. Zaverbhai Dhimmar, *Valsad, Gujarat – 18.11.2017*

♦♦♦♦♦♦♦♦

Jay Jagat, I am happy to have your journal and appreciate your article including the editorial coverage. I took a print out of the journal and placed in our news rack for the people visiting our organisation as well our associates to follow the journal. With regards

Aditya Patnaik, *Convenor, Sarvodaya Samaj – 18.11.2017*

♦♦♦♦♦♦♦♦

खोज गाँधीजी की पत्रिका हमें मिली। सत्य, अहिंसा, त्याग ये महात्मा गाँधीजी की ही प्रेरणा है। आप और हम इस विचार से प्रेरित है। संपादकीय में अश्विन झाला लिखते है शाश्वत सामाजिक रचना में अपना योगदान दे। हम इस विचार के समर्थक है। निर्बल में बल राम, भारत छोडो आंदोलन, आज की समाज रचना संबंधित लेख व फाउण्डेशन की गतिविधियाँ बहुत ही सराहनीय है।

आप सबको साधुवाद।

डॉ. जगदिश चंद्र, *लेखक, सोलापूर ४१३००१. २६/११/२०१७*

♦♦♦

संग्रहालय–दर्शकों के अभिमत

'खोज गाँधीजी की' संग्रहालय को देखने के लिए हजारों लोग प्रतिदिन गाँधी तीर्थ पहुँचते हैं। प्रस्तुत है संग्रहालय के विषय में कुछ दर्शकों के अभिमत – ***संपादक***

एक अत्यंत रमणीय परिसर में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की जीवनयात्रा को देखकर हमारे देश के आझादी के इतिहास की यादें ताजी हुई। जब हमारी नई पीढी यांत्रिकीकरण की दुनिया की चकाचौंध में डूबी हुई है और विभिन्न पर्यावरणीय समस्याओं से जूझ रही है वैसे वातावरण में गाँधीजी के सिद्धांतों का अनुसरण अवश्य रुप से हमारी जीवन शैली में परिवर्तन ला सकता है।

महेशकुमार शाह, *उधना, सुरत १०/११/२०१७*

♦♦♦

अतिथि देवो भव!

चार्ल्स देवेनीश, ऑस्ट्रेलिया एवं तुषार गाँधी, मुंबई
०१.१०.२०१७

महात्मा गाँधी के जीवन एवं उनके कार्यों को गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन स्थित 'खोज गाँधीजी की' संग्रहालय में अत्याधुनिक तकनीक के साथ समन्वित करके युवाओं के लिए कैसे उपयोगी बनाया गया है? इसे देखने व समझने के लिए अतिथियों का स्वाभाविक प्रवाह होता रहता है। अतिथि हमारे लिए देवतुल्य हैं।

संत गजानन महाराज इंजिनिअरींग कॉलेज, शेंगांव
०७.१०.२०१७

अंजली चंद्रकांत पाटील, मुंबई
०९.११.२०१७

अविनाश कुलकर्णी, वरिष्ठ प्रबंधक, एस.बी.आय. बैंक, मुंबई, १८.११.२०१७

दिप्ती कराले, जलगाँव
२१.११.२०१७

महानगरपालिका कर्मचारी समूह, जलगाँव
२९.११.२०१७

प्रो. एन. रामचंद्रन्, कुलपति, संदीप युनिवर्सिटी, नासिक
०१.१२.२०१७

गौरी शंकर अग्रवाल, मा. विधानसभा अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ ०२.१२.२०१७

विलास सोनवणे, आतायात पोलिस निरीक्षक, जलगाँव
०६.१२.२०१७

ईला गाँधी अपने परिवार के साथ, दक्षिण अफ्रीका
१४.१२.२०१७

अरुण देशपांडे, अध्यक्ष-ग्राहक पंचायत, मुंबई
१५.१२.२०१७

प्रो. गीता मेहता, मुंबई
१७.१२.२०१७

विद्यासागर राव, राज्यपाल, महाराष्ट्र राज्य
२०.१२.२०१७

किसान समूह, कर्नाटक
२३.१२.२०१७

आस्था ग्राम ट्रस्ट के विद्यार्थी, खरगोन, मध्यप्रदेश
२७.१२.२०१७

ज्युबिली इंग्लिश हाईस्कूल के छात्र, अकोला
२७.१२.२०१७

सोनम वांगचुक अपने परिवार के साथ, लदाख, जम्मु-कश्मीर ३०.१२.२०१७

RNI Title Code:- MAHBIL10001

चित्रशृंखला–१९

गोलमेज परिषद

महात्मा गाँधी, पंडीत मदनमोहन मालविया द्वितीय गोलमेज सम्मेलन के दौरान, लंदन १९३१

महात्मा गाँधी, सरोजिनी नायडू के साथ गोलमेज परिषद के दौरान, लंदन १९३१

गोलमेज सम्मेलन के स्थल पर जाते हुए महात्मा गाँधी, रंगास्वामी आयंगार, महादेवभाई देसाई, सरोजिनी नायडू एवं प्रभाशंकर पट्टणी, लंदन १९३१

यदि मैं आपके सामने बोले बिना रह सकता तो अच्छा होता। किंतु मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि यदि मैं नहीं बोलूँगा तो यह आपके प्रति तथा उसी तरह मेरे सिद्धांत के प्रति अन्याय होगा। संभव है कि ये काँग्रेस की ओर से कहे गये अंतिम शब्द हों। मैं किसी भ्रम में नहीं हूँ। मैं नहीं समझता कि इस समय मैं जो कुछ कहूँगा, उससे मंत्री-मंडल के निर्णय पर कुछ असर पड़ सकता है। निर्णय तो शायद लिया जा चुका हो। लगभग एक पूरे महाद्वीप की स्वतंत्रता का प्रश्न केवल दलीलों अथवा संधी-वार्ता से भी कदाचित ही हल हो सकता हो। वार्ता का भी कुछ अर्थ होता है, और वह भी कुछ काम करती है, किंतु विशिष्ट परिस्थितियों में ही।

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए खोज गाँधीजी की यह त्रैमासिक मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन इन्होंने आनंद पब्लिकेशन्स्, १०६/१, मुसली फाटा, ता. धरणगाँव, जि. जलगाँव-४२५१०३, महाराष्ट्र। यहाँ से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव-४२५००१, महाराष्ट्र यहाँ से प्रकाशित किया। संपादक – अश्विन भामाभाई झाला।